TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | वृहस्पतिवार | 28 सितम्बर 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :30 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

वाइब्रेंट गुजरात का बीज अब वृक्ष बन गया है: प्रधानमंत्री

वाइब्रेंट गुजरात के 20 साल पूरे होने पर पीएम मोदी ने कांग्रेस पर साधा निशाना

अहमदाबाद एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अहमदाबाद की साइंस सिटी में वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट के 2० साल पूरे होने पर आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि 2० साल पहले एक बीज बोया था जो अब एक विशाल पेड़ बन गया है। उन्होंने कहा, '2० साल पहले हमने एक छोटा सा बीज बोया था आज वो इतना विशाल और वृहद वृक्ष बन गया है। आज 2० साल वाइब्रेंट गुजरात के पूरे होने पर वाइब्रेंट गुजरात सिर्फ ब्रांडिंग भर नहीं है। मेरे लिए ये मजबूत बॉन्ड का प्रतीक है ये 7 करोड़ नागरिकों से जुड़ा हुआ है।'

इस दौरान पीएम मोदी ने कहा, 'आज की पीढ़ी के युवा साथियों को पता भी नहीं होगा कि गुजरात की स्थिति भी क्या होगी। जो भूकंप आया, हजारों लोगों की मौत हो गई। काल और भूकम्प के अलावा एक बैंक डूब गया। पूरे गुजरात के आर्थिक में हाहाकार मच गया। उस समय मैं पहली बार विधायक बना था मेरे लिए सब नया था लेकिन चुनौती बड़ी थी। इस बीच गोधरा की घटना हुई लेकिन मेरा गुजरात पर अपने लोगों पर अटूट भरोसा था। हालांकि जो लोग एजेंडा लेकर चलते हैं वो लोग घटना का विश्लेषण करने पर जुट गए थे। हमारे संकट में भी मैंने प्रण लिया गुजरात को इसे बाहर निकाल कर रहूंगा। आज मैं एक बात और याद दिलाना चाहता हूं। आज दुनिया जीवंत गुजरात की सफलता देख रही है।' कार्यक्रम में इंडस्ट्री ग्रुप्स, व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्रों की प्रमुख हस्तियों, युवा उद्यमियों, उच्च और तकनीकी शिक्षा महाविद्यालयों के छात्रों सहित अन्य लोग भी हिस्सा लिया। तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पहला वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2००3 में हुआ था। पीएम मोदी ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा, 'जो लोग पहले केंद्र सरकार चलाते थे वे गुजरात के विकास को राजनीति से जोड़ते थे। तत्कालीन केंद्र सरकार के मंत्री वाइब्रेंट गुजरात में आने से इनकार करते थे। वे विदेशी निवेशकों को धमकाते थे और उन्हें रोकने की कोशिश करते थे. इतनी धमकियों के बाद भी विदेशी निवेशक गुजरात आए।'

यूपी के भाजपा नेताओं के हाथ में रहेगी एमपी व राजस्थान के चुनाव की कमान

जेपीएस राठौर मध्य प्रदेश व अरूण सिंह राजस्थान की संभालेंगे बागडोर

लोक पहल

लखनऊ। भाजपा ने उप्र के नेताओं पर विष्वास जताते हुए उन्हें राजस्थान और मध्य प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव में चुनावी बागडोर सौंपने का फैसला किया है। इन दोनो राज्यों के चुनाव की कमान उत्तर प्रदेश के दिग्गज मंत्रियों और पार्टी के पदाधिकारियों के हाथ रहेगी। एक छोर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक प्रचार करेंगे तो दूसरी ओर प्रदेश सरकार के मंत्री और पार्टी पदाधिकारी चुनावी प्रबंधन देखेंगे।

मध्य प्रदेश में चुनाव प्रबंधन की कमान सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जेपीएस राठौर के हाथ में दी गई है। उन्हें भोपाल संभाग के 25 विधानसभा क्षेत्रों का प्रभारी भी बनाया गया है। राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह को राजस्थान का प्रभारी बनाया गया हैं। यहां प्रदेश महामंत्री गोविंद शुक्ला को जयपुर में प्रदेश मुख्यालय पर चुनावी व्यवस्थाओं के लिए तैनात किया गया है। पूर्व मंत्री महेंद्र सिंह अजमेर संभाग के अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक और नागौर के 29 विधानसभा क्षेत्रों का प्रभारी बनाया गया है।

राजनीति में कम हो रही है शरीफों की हिस्सेदारी: वरूण गांधी

- एक बार फिर मुखर हुए भाजपा सांसद, व्यवस्था पर लगाया प्रश्नचिन्ह

लोक पहल

पीलीभीत। एक बार फिर भाजपा सांसद वरूण गांधी अपनी ही पार्टी और उसके शासन पर उंगली उठाते हुए मुखर होते दिखाई दिए। अपने संसदीय क्षेत्र में दौरे पर आए सांसद वरुण गांधी ने व्यवस्था पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा, राजनीति में शरीफों की हिस्सेदारी कम हो रही है। आजादी के बाद भी आम आदमी को अफसरों के सामने झुक कर दबी जुबां में ही बात करनी पड़ती है। आम आदमी की दो-चार लाख का लोन लेने में ही चप्पलें घिस जाती हैं।

लोन अदा न करने पर कुर्की हो जाती है, लेकिन बड़े लोगों को 1०-1० हजार करोड़ रुपये दिए जा रहे हैं। वरुण गांधी ने ललौरीखेड़ा ब्लॉक के ग्राम भानपुर, हंडा, तेजनगर-मेहताब नगर, गौनेरी बदी, गौनेरी दान, गौनेरा, सूरजपुर शिवनगर, खुंडारा, चांददांडी, नूरपुर व ग्राम शाही में आयोजित जनसंवाद कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि वर्तमान राजनीति में शरीफलोगों का हिस्सा कम होता जा रहा है। जो लोग राजनीति में आ रहे हैं उनकी सोच कहीं न कहीं स्वार्थी है। राजनीति में अब क्रांति का प्रचलन कम होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज भी जब आप थानेदार, तहसीलदार या अन्य किसी अधिकारी से मिलने जाते हैं तो आपको अपनी बात दबी जुबां से कहनी पड़ती है। आपके-हमारे पूर्वजों ने अंग्रेजों से लड़ाई इसलिए लड़ी थी कि हिंदुस्तानियों को दबना न पड़े। दिल्ली, मुंबई के लड़कों को रोजगार मिल रहा लेकिन यहां के बेरोजगारों को नहीं मिलता।

सावधान: भारत में तेजी से बढ़ रहे हैं बुजुर्ग

करीब तीन दशक बाद 20 प्रतिशत होगी बुजुर्गो की आबादी

नई दिल्ली एजेंसी। आज भले ही हम यह सोंचकर खुश हो रहे हैं कि भारत विष्व में सबसे युवा देश है लेकिन एक और डराने वाला सच भी सामने आया है कि युवा होने के साथ ही आने वाले समय में भारत सबसे वृद्ध देषों में शुमार होने लगेगा। आज का युवा भारत आने वाले दशकों में तेजी से वृद्ध होते समाज में बदल जाएगा। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष व भारत इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पापुलेशन साइंसेज की रिपोर्ट के अनुसार 2०5० तक हर पांच में से एक शख्स बुजुर्ग होगा। सदी के अंत में कुल आबादी में 36 फ ीसदी वृद्ध होंगे, जो अभी महज 1०.1 फीसदी हैं। मौजूदा चलन के मुताबिक तकरीबन 15 साल में 6० वर्ष से ज्यादा उम्र के नागरिकों की संख्या दोगुनी हो रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत ही नहीं, पूरी दुनिया की आबादी बूढ़ी हो रही है। भारत में बुजुर्गों की तादाद बढ़ने की तीन वजह हैं- घटती प्रजनन क्षमता, मृत्यु दर में कमी और उत्तरजीविता में वृद्धि। बीते एक दशक में देश में प्रजनन क्षमता में 2० फीसदी की गिरावट आई है। 2००8-1० के दौरान देश की सकल प्रजनन दर 86.1 थी, जो 2०18 से 2०2० के दौरान घटकर 68.7 रह गई है। कुल आबादी में बुजुर्गों के राष्ट्रीय औसत से कम संख्या वाले 11 राज्य हैं। इनमें 7.7 प्रतिशत बुजुर्ग आबादी के साथ बिहार देश का सबसे युवा राज्य है। 8.1प्रतिशत बुजुर्ग आबादी के साथ उत्तर प्रदेश दूसरा सबसे युवा राज्य है। शीर्ष पांच राज्यों में असम (8.2प्रतिशत) तीसरे, झारखंड (8.4प्रतिशत) चौथे और राजस्थान व मध्य प्रदेश (8.5प्रतिशत) पांचवें स्थान पर हैं। 6० पार उम्र की 16.5 प्रतिशत आबादी के साथ केरल सबसे बुजुर्ग राज्य है। वहां बुजुर्गों की उत्तरजीविता में वृद्धि व प्रजनन दर में तीव्र गिरावट हुई है। सबसे बुजुर्ग पांच राज्यों में तमिलनाडु, केरल व आंध्र प्रदेश दक्षिण से हैं, हिमाचल व पंजाब उत्तर से हैं। आंध्र (12.3 प्रतिशत) पांचवां, पंजाब (12.6 प्रतिशत) चौथा, हिमाचल (13.1 प्रतिशत) तीसरा और तमिलनाडु (13.7 प्रतिशत) दूसरा सबसे बुजुर्ग राज्य है।

राष्ट्रीय स्तर पर बुजुर्गों की आबादी 2०21 में 1०.1 प्रतिशत थी जो 2०36 में 15 प्रतिशत हो जाएगी। 2०5० में बुजुर्ग आबादी 2०.8 प्रतिशत होगी। रिपोर्ट के मुताबिक निर्भरता अनुपात चिंता की बात है। फिलहाल 1०० कामकाजी लोगों पर 16 वृद्ध और प्रति 1०० बच्चों की तुलना में 39 बुजुर्ग हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2००० से 2०22 के दौरान भारत की कुल आबादी करीब 34 फीसदी बढ़ी है, लेकिन इस दौरान 6० से ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या में 1०3 फीसदी का इजाफ हुआ है। इससे भी ज्यादा चिंता की बात यह है कि 2०22 से 2०5० के दौरान देश की कुल आबादी करीब 18 फीसदी बढ़ेगी, जबकि वृद्धों की संख्या में 134 फीसदी की वृद्धि होगी। खासतौर पर 8० से ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या में 279 फीसदी की वृद्धि होगी।

मुश्किल में राजा भैया, सीओ हत्याकांड में सीबीआई फिर करेगी जांच

लोक पहल

प्रतापगढ़। उप्र के बाहुबली विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फराजा भैया की मुष्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही है। पिछले दिनों पारिवारिक विवाद के चलते चर्चा में रहने के बाद कुंडा विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फराजा भैया एक बार फिर सुर्खियों में हैं। वर्ष 2०13 में हथिगवां के बलीपुर में तत्कालीन सीओ जिया उल हक की गोली मारकर हत्या के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने उनकी भूमिका की फिर से जांच के आदेश दिए हैं।

बलीपुर में 2 मार्च 2०13 को तीन लोगों की हत्या हुई थी। सीओ जिया उल हक बलीपुर प्रधान नन्हे यादव और उसके भाई सुरेश यादव की हत्या के बाद हुए बवाल पर घटनास्थल पर पहुंचे। कुंडा कोतवाल सर्वेश मिश्रा, एसएसआई विनय उन्हें अकेला छोड़कर भाग निकले, जिसके बाद सीओ की बेरहमी से पिटाई के बाद गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में जियाउल हक की पत्नी परवीन आजाद ने तत्कालीन खाद्य एवं रसद मंत्री रघुराज प्रताप सिंह राजा भैया समेत अन्य के खिलाफ हत्या की साजिश रचने और हत्या का केस दर्ज कराया था। इसके बाद राजा भैया को अखिलेश सरकार में मंत्री पद से इस्तीफ देना पड़ा था। तिहरे हत्याकांड की जांच पहले पुलिस और बाद में सीबीआई द्वारा की गई थी। जांच के बाद रघुराज प्रताप को क्लीन चिट मिल गई थी। इसके खिलाफ परवीन आजाद ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था।

सीओ जिया उल हक की हत्या के मामले में सीबीआई ने रघुराज प्रताप सिंह उर्फराजा भैया और अक्षय प्रताप सिंह उर्फगोपाल जी से तीन दिन तक गहन पूछताछ की थी। कोर्ट में क्लोजर रिपोर्ट दाखिल करने के बाद राजा भैया के खिलाफ मामला बंद कर दिया गया, हालांकि सीओ की पत्नी परवीन आजाद ने अदालत में लड़ाई जारी रखी। 1० साल बाद अब सुप्रीम कोर्ट ने जिया उल हक हत्याकांड में कुंडा विधायक राजा भैया की भूमिका की जांच का आदेश सीबीआई को दिया है।

भारतीय राष्ट्रवाद एक जीवंत संस्कृति

एसएस कालेज में भारतीय चिंतन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद" विषय पर व्याख्यान का आयोजन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में नौ दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक जागरूकता अभियान के समापन समारोह में भारतीय चिंतन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, प्रांत प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, ब्रज प्रांत डॉ. हरीश रौतेला ने कहा कि मनुष्य की आत्मा की गहराई को नापने का कार्य केवल संस्कृति ही कर सकती है। राष्ट्र निर्माण के लिए पश्चिम के देश भूमि तथा जन को ही महत्वपूर्ण मानते हैं जबकि भारतीय परिवेश में राष्ट्र की संकल्पना भूमि तथा जन के साथ ही मातृभूमि के साथ भावनात्मक लगाव से है, जो भारतीय संस्कृति के साथ समाहित है। मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता, स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि विश्व की किसी संस्कृति में वह उदारता नहीं है, जो भारतीय संस्कृति में है। भारत की धरती विश्व को उजाला देती है क्योंकि हम विश्व को एक परिवार के रूप में देखते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए टी.डी. लॉ कॉलेज, जौनपुर के प्राचार्य डॉ. सूर्य प्रकाश सिंह मुन्ना ने कहा कि आज पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है। पूरे विश्व को हम एक परिवार के रूप में देखते आए हैं यही हमारी राष्ट्रीयता का पहचान है। मुख्य वक्ता, अपर मुख्य स्थाई अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, प्रयागराज डॉ. संतोष शुक्ला ने कहा कि भारतीय राष्ट्रवाद भाषा पर आधारित ना होकर बल्कि संस्कृति पर आधारित है। हमारे यहां वैदिक काल से ही राष्ट्र की संकल्पना अस्तित्व में थी । भारत की राष्ट्रीय संकल्पना वसुधैव कुटुंबकम अर्थात एक परिवार की अवधारणा पर आधारित है।

विशिष्ट अतिथि संगठन मंत्री अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना संजय मिश्रा ने कहा कि पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद का जो दर्शन दुनिया को दिया। वह उस समय के पूंजीवादी एवं समाजवादी दर्शन के बीच सेतु का कार्य किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनुराग अग्रवाल ने किया।

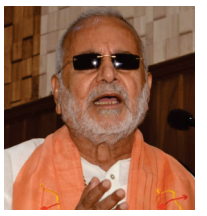

कार्यक्रम के दौरान डॉ. विकास खुराना, अध्यक्ष इतिहास विभाग, एस.एस. कॉलेज के द्वारा लिखी पुस्तक, शाहजहांपुर का इतिहास एवं विवेक विद्रोही के द्वारा लिखित पुस्तक, दामोदर स्वरूप विद्रोही समग्र का भी विमोचन किया गया। संगीत विभाग की डॉ. कविता भटनागर एवं छात्राओं द्वारा कुल गीत एवं वंदे मातरम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर प्रो. अनूप कुमार फैजाबाद विश्वविद्यालय, एस.एस. लॉ कॉलेज के प्राचार्य, डॉ. जयशंकर ओझा, डा आलोक मिश्रा, डॉ. दीपक सिंह, ईशपाल सिंह, शशांक भाटिया, धर्मेन्द्र, डॉ. अनिल कुमार शाह, डॉ. अमित कुमार यादव, डॉ. पवन कुमार गुप्ता, विजय सिंह, डॉ. प्रेमसागर, डॉ. अमरेंद्र सिंह, डा पदमजा मिश्रा, प्रियंक वर्मा, अमित सैनी, गौरव गुप्ता, शिव ओम शर्मा व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

आतिश के गज़ल संग्रह 'चश्मे-नम' का विमोचन

लोक पहल

शाहजहांपुर। साहित्य ने सदैव सामाजिक सद्भाव को सुदृढ़ बनाए रखने का कार्य किया है। वर्तमान में भी मानवीय मूल्यों के बिखराव को रोकने के लिए साहित्यकारों द्वारा अपनी भूमिका का निर्वाह अपरिहार्य है। उक्त विचार शायर आतिश मुरादाबादी के गजल-संग्रह 'चश्मे-नम' के विमोचन समारोह की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ कवि ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपने आसपास के माहौल से प्रभावित जरूर होता है।

तुलसी-मीर फाउंडेशन के तत्वावधान में विमोचन समारोह टाउनहाल स्थित एक कैफे में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि शायर खलील शौक ने कहा कि नए रचनाकारों में गजल के नियमों के प्रति उनकी गहन रुचि भी देखने को मिल रही है। विशिष्ट अतिथि बाल साहित्यकार डा. अरशद खान ने कहा कि साहित्य के क्षेत्र में भी शाहजहांपुर की भूमि बहुत ही उर्बरा है। हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में साहित्य सृजन बखूबी किया जा रहा है। तुलसी-मीर फाउंडेशन के अध्यक्ष इशरत सगीर ने कहा कि आतिश मुरादाबादी गजल के नियमों से बखूबी वाकिफहैं। इस अवसर पर शायर आतिश मुरादाबादी ने 'चश्मे-नम' के प्रकाशन में उत्साहबर्धन करने वालों के प्रति आभार व्यक्त किया।

युवाकवि पीयूष शर्मा ने वाणी वंदना तथा शायर फ्हीम बिस्मिल ने नात प्रस्तुत कर समारोह का शुभारम्भ किया। अतिथियों ने पुस्तक का विमोचन किया तथा शायर आतिश मुरादाबादी को उनके साहित्यिक योगदान के लिए शाल ओढ़ाकर व स्मृतिचिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

शायर असगर यासिर, रशीद हुसैन राही, अजय अवस्थी व परवेज अहमद खान ने भी समारोह को सम्बोधित किया। इस अवसर पर पुरुषोत्तम गोस्वामी, शायर हमीद खिजर, डा. राजीव सिंह भारत, लालित्य पल्लव भारती, जितेन्द्र अग्निहोत्री, अभिषेक ठाकुर श्अधीरश्, राम प्रवेश सिंह, कीर्तिमान च्यवन, अनूप कुमार एडवोकेट, हन्नान खान, कार्टूनिष्ट सैफ असलम, सुखवंत सिंह, चाँदनी रखेजा, फरहान चिश्ती आदि उपस्थित रहे। समारोह के अंत में तुलसी-मीर फाउंडेशन के सचिव विकास सोनी 'ऋषुराज' ने आभार ज्ञापित किया।

राइफल शूटिंग प्रतिस्पर्धा में ओशीन अनेजा ने पाया दूसरा स्थान, राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हुआ चयन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। शहर निवासी राकेश अनेजा व सलोनी अनेजा की पुत्री ओशीन अनेजा ने राज्य स्तरीय राइफ ल शूटिंग प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। हापुड़ के भविष्य पब्लिक स्कूल में आयोजित प्रतियोगिता में ओशीन अनेजा ने 10 मीटर राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में 400 में 385 अंक पाकर दूसरे स्थान के साथ सिल्वर पदक हासिल किया है। उत्तर प्रदेश राइफल एसोसिएशन के अध्यक्ष जीएस सिंह, गाजियाबाद व हापुड़ के जिलाधिकारी ने ओशिन को सिल्वर पदक पहनाकर सम्मानित किया। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता से अब उनका चयन राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में हुआ है। ओशीन ने अपनी इस सफ्लता का श्रेय अपने माता-पिता सलोनी अनेजा व राकेश अनेजा को दिया। इस अवसर पर दादा राम प्रकाश अनेजा, शशि सेठी समेत अन्य परिवार के सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया।

श्रद्धा, भक्ति एंव उल्लास के साथ मनाया गया 'दाजी' का 68 वां जन्मोत्सव

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री रामचन्द्र मिशन के अध्यक्ष और हार्टफुलनेस मेडीटेशन के ग्लोबल गाइड व पद्म विभूषण सम्मान से सम्मानित कमलेश डी पटेल 'दाजी' का 68 वां जन्मोत्सव श्रद्धा, भक्ति एंव उल्लास के साथ मनाया गया। मिशन के अनुयायियों ने ध्यान साधना कर आध्यात्मिक उन्नति की कामना की तथा महात्मा रामचन्द्र जी महाराज की समाधि पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर गुरूसता को प्रणाम किया। मिश्रीपुर स्थित श्री राम चन्द्र मिशन का माहौल श्रद्धा एंव भक्ति पूर्ण था मुख्य उत्सव के दिन आश्रम आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बन गया। जन्मोत्सव का शुभारम्भ पूज्य बाबू जी महाराज के समाधि स्थल पर पुष्प अर्पित कर किया गया। इसके उपरान्त सभी अभ्यासियो ने ध्यान कर आत्मोत्थान, मानव कल्याण व विश्व बंधुत्व की कामना की। इस मौके पर अभ्यासियों को सम्बोधित करते हुए जोन प्रभारी दीपक त्यागी ने कहा कि राम चन्द्र जी महाराज नें राजयोग की जो सरल साधना पद्धति लोगो को उपलब्ध करायी वह सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड में अद्वितीय है। वर्तमान में गुरूदेव पार्थसारथी राजगोपालाचारी की महा-समाधि के उपरान्त उनके उत्तराधिकारी पूज्य श्री कमलेश पटेल 'दाजी' इसको जन जन तक पहुचाने का काम कर रहे है। उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन में रहकर ईष्वर प्राप्ति का इस पद्धति जैसा कोई दूसरा माध्यम नहीं है। आज विश्व के 165 से अधिक देशों में इस सहज मार्ग साधना पद्धति से जुड़कर आध्यात्मिक लाभ उठा रहे हैं। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में 'हृदय ग्राम अभियान' के माध्यम से जन जन तक सहज मार्ग साधना पद्धति को पहुंचाने का काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में एक सक्षम गुरू के सानिध्य के बिना शांतिमय जीवन नही मिल सकता। इस मौके पर अभ्यासियों ने गीत भजन व वार्ता प्रस्तुत की।

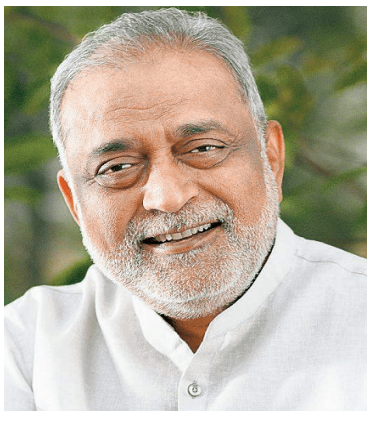

इस दौरान ललिता त्यागी, प्रशिक्षक आनंद बाबू मिश्रा, बृहमा शंकर शर्मा, संतोष सक्सेना, हर्ष अग्रवाल, सुयश सिन्हा, कृष्णा भारद्वाज, लक्ष्य वाधवानी, सुनील अग्रवाल, संजीव मौर्या, सुनीता सिन्हा, प्रतिमा, मंमत्य मिश्रा, राकेश भारद्वाज, प्रवीण बाजपेई सहित मिशन के सैकड़ो अभ्यासी मौजूद रहे।

गड्ढा मुक्त करे जिले की सड़के: जिलाधिकारी

सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में डीएम ने दिए निर्देश

लोक पहल

शाहजहांपुर। कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह की अध्यक्षता में हुई संपन्न। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित विभागों से उनके द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी ली। पुलिस विभाग ने बताया की जाति सूचक शब्द लिखी हुई 275 गाड़ियों का चालान अब तक किया जा चुका है तथा अब तक कुल 236000 रुपयों की वसूली भी की जा चुकी है। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि स्कूली बच्चों को लाने ले जाने के लिए प्रयोग मे लायी जाने वाली ई- रिक्शा में जाली का लगा होना अनिवार्य है, ई-रिक्शा के प्रबंधन के संबंध में उन्होंने कहा कि संबंधित अधिकारियों को निर्देष दिए कि देश के सर्वश्रेष्ठ मॉडलों का अध्ययन करके शहर में उसे लागू करने का प्रयास करना चाहिए। जिलाधिकारी ने कहा कि इस समिति का मुख्य उद्देश्य ब्लैक स्पॉट को चिन्हित करना, सड़कों को गड्ढा मुक्त बनाना तथा चालान की स्थिति में सुधार आदि है। बैठक में एसपी सिटी सुधीर जायसवाल, एडीएम प्रशासन संजय कुमार पांडे, सिटी मजिस्ट्रेट डॉ वेद प्रकाश मिश्रा, एआरटीओ, नेशनल हाईवेज अथॉरिटी ऑफ इंडिया के प्रतिनिधि, बीएसए रणवीर सिंह आदि मौजूद रहे।

भारतीय संविधान सामान्य दस्तावेज नहीं, हमारे सपनों का दर्पण है

एसएस लॉ कालेज में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं विधि' पर व्याख्यान का आयोजन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं विधि'' तथा ''भारतीय संविधान के 73 वर्षों की यात्रा'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधि संकायाध्यक्ष, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रो. सीपी उपाध्याय ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है, जो राष्ट्र निर्माण की भूमिका के अनुरूप है। शिक्षा से जहां एक ओर विनम्रता का गुण विकसित होता है वही आलोचनात्मक दृष्टिकोण का भी निर्माण होता है। मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि भारतीय संविधान में वह शक्ति है, जिसके द्वारा जाति, धर्म, लिंग के आधार पर भेदभाव समाप्त कर एक गरिमामय राष्ट्र व समाज की स्थापना की जा सकती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व सदस्य, उ.प्र. उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग प्रो. हरवंश दीक्षित ने कहा कि भारतीय संविधान सामान्य दस्तावेज न होकर हमारे सपनों का दर्पण है भारतीय संविधान में उल्लिखित न्याय का अर्थ व्यापक है।

सत्र का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। मंच संचालन डॉ. दीप्ति गंगवार ने किया। प्राचार्य, डॉ. जयशंकर ओझा ने आभार व्यक्त किया। डॉ. प्रतिभा सक्सेना एवं छात्राओं द्वारा स्वागत गीत एवं वंदे मातरम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर डॉ. अनिल कुमार शाह, डॉ. अमित कुमार यादव, डॉ. पवन कुमार गुप्ता, विजय सिंह, डॉ प्रेमसागर, डॉ. अमरेंद्र सिंह, प्रियंक वर्मा आदि मौजूद रहे।

एनसीसी कैडेट्स ने गांधी पार्क में चलाया स्वच्छता अभियान

लोक पहल

शाहजहांपुर। 'कचरा मुक्त भारत, स्वच्छता ही सेवा आभियान' का शुभारंभ 25 यूपी बटालियन एनसीसी के कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल विजय कुमार मिश्र के निर्देशन में हुआ। आभियान के तहत एसएस कॉलेज के एनसीसी कैडेटों द्वारा महात्मा गांधी पार्क में वृहद स्वच्छता अभियान चलाया गया।

इस अवसर पर लेफ्टिनेंट कर्नल विजय कुमार मिश्र ने कहा कि इस आभियान का उद्देश्य सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से जन आंदोलन उत्पन्न कर करोड़ों नागरिकों को जागरूक करना है। आभियान के संयोजक लेफ्टिनेंट डॉ आलोक कुमार सिंह ने स्वच्छता ही सेवा की शपथ दिलवाई। उपस्थित कैडेट्स को संबोधित करते हुए लेफ्टिनेंट आलोक ने कहा, कि भारत स्वच्छता और आरोग्य के लिए निर्णायक लड़ाई लड़ रहा है। स्वच्छता केवल सफ ईकर्मियों और सरकारी विभागों की जिम्मेदारी नहीं हैं।

इस अवसर पर अंडर आफिसर आकांक्षा मिश्रा, कैडेट ऋषभ, अनमोल, पंकज, युवराज, सार्थक, जितिन, सूर्या बाजपेई, कैडेट सुलोचना, कैडेट स्वा, कैडेट नेहा, कैडेट चारु, कैडेट सुहानी सहित पचास कैडेट उपस्थित रहे।

1857 की क्रांति पर चर्चा का आयोजन

शाहजहांपुर (लोक पहल)। स्वामी शुकदेवानंद कालेज के वाचनालय कक्ष में जनपद शाहजहांपुर में 1857 पर हुई क्रांति पर चर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इतिहास विभागाध्यक्ष डा विकास खुराना ने कहा कि जनपद शाहजहांपुर का भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष में योगदान अप्रतिम हैं। उस रोज सुबह के सात बजे थे। कैप्टन सिनिड अपने अरदली ईश्वरी प्रसाद से पत्र स्वीकार कर रहे थे कि जोर से शोर सुनाई दिया। कप्तान साहब ने पूछा यह शोर कैसा है। इतने में महमूद बख्श तेजी से भागते आते दिखे। वे चिल्ला रहे थे कि तलवार चली है। कप्तान सिनीड फौरन घर के अंदर गए और दो बंदूके लेकर बाहर आए। एक उन्होंने ईश्वरी प्रसाद को दी और कहा मेरे पीछे रहना। जब वे चर्च पहुंचे तो वहां पहली बटालियन अट्ठाईसवी रेजीमेंट के सिपाही जवाहर राय द्वारा अपने साथियों के साथ क्रांति घटित कर दी गई थी। डा मधुकर श्याम शुक्ला ने कहा कि जनपद शाहजहांपुर में अठारह सौ सत्तावन की क्रांति दीर्घ जीवी थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता पुस्तकालय प्रमुख डा एसपी डबराल ने की तथा संचालन मनोज अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम में डा रामशंकर पांडे, वरुण कुमार सिंह, विनीत तिवारी सहित अनेक छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

सफाई मित्र सुरक्षा शिविर का आयोजन

शाहजहांपुर (लोक पहल)। नगर निगम की ओर से सफाई मित्र सुरक्षा शिविर का आयोजन गांधी भवन सभागार में किया गया। शिविर का शुभारंभ अपर नगर आयुक्त एसके सिंह ने किया। शिविर में सफाई मित्रों को सरकार द्वारा दी जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ देने हेतु स्वास्थ्य विभाग, डूडा, बैंक, गैस एजेंसी, विद्युत विभाग आदि को आमंत्रित किया गया। शिविर में सफाई कर्मचारियों को सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया गया। साथ ही कर्मचारियों का प्रशिक्षण तथा पीपीई किट का वितरित की गई। अपर नगर आयुक्त एसके सिंह ने कहा कि सफाई कर्मचारियों की सुरक्षा एवं उनका हित लाभ नगर निगम की प्राथमिकताओं में से है, इस शिविर के माध्यम से समस्त पात्र सफाईकर्मियों को विभिन्न प्रकार की सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सकेगा। कार्यक्रम के दौरान नगर स्वास्थ्य अधिकारी, समस्त एसएफआई, डीपीएम और अन्य कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

सफर–ए–अल्फाज ने किया ओपन माइक इवेंट का आयोजन

कवियों और शायरों ने सुनाईं गीत-गजलें

लोक पहल

शाहजहाँपुर। सफर-ए-अल्फाज संस्था की ओर से शहर में स्थित एक कैफे में विशेष ओपन माइक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कवियों और शायरों के अलावा युवा लेखकों और गायकों ने हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस मौके पर युवा शायर इरफ ान रूहानी, रोजी खान, विनय कैथवार, शिल्पा सिंह, सृजन सक्सेना मोहम्मद अम्मार फारिस, हरिहर पांडे, विश्वनाथ विश्व, मोहम्मद जफर, शिवम शर्मा, नवनीत मिश्रा, पीयूष यादव, उत्पल सिंघानिया, नरेंद्र सक्सेना, कबीर मिश्रा, अब्दुल रहमान ने गीत और गजलें सुनाईं। कार्यक्रम में सरिता बाजपेयी ने कविताएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम के संयोजक आयुष बाजपेयी ने कहा कि सफर-ए-अल्फ ाज का उद्देश्य वरिष्ठ लेखकों की उपस्थिति में नए और युवा लेखकों को प्रोत्साहित करना है। आयोजन में उप संस्थापक शशांक बाजपेई, गगन अवस्थी, संस्था के प्रबंधक इरफान रुहानी, रोजी खान ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले कवियों, शायरों एवं गायकों को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में कवयित्री सरिता बाजपेयी और शायर राशिद हुसैन राही जुगनू, अभिषेक श्रीमली, संदेश श्रीमली का बैज लगाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में पी सी अवस्थी, अर्चना बाजपेई, आराध्य मिश्रा, फरमान खां चिश्ती, नरेंद्र सक्सैना, सुमित मिश्रा समेत तमाम लोग मौजूद रहे। संचालन आयुष आकाशी ने किया।

धरोहर

कभी शाहजहांपुर में ही दी जाती थी ट्रेन चालकों और गार्डों को ट्रेनिंग

सुशील दीक्षित 'विचित्र'

क्या आप जानते हैं कि जो ट्रेनिंग आज मुरादाबाद में दी जाती है एक जमाने में ट्रेन ड्राइवर केबिन मैन और गार्ड को वह ट्रेनिंग शाहजहांपुर में दी जाती थी। बाद में यह सिस्टम यहाँ से चला गया। क्यों चला गया ? इसका जबाब न मैंने तलाशने की कोशिश की और न ही मेरी इसमें कोई दिलचस्पी थी। आप सबने गोविन्द गंज में रेलवे कालोनी देखी होगी। बहुत लोगों ने अंदर भी देखी होगी। कई बीघे में फैली यह कालोनी गोविन्द गंज और बाडूजई अव्वल जैसे दो मोहल्लों को अपने में समाहित किये हुए है। इसकी दक्षिणी दीवार के समानांतर मैथोडिस्ट चर्च की दीवार थोड़ी दूर तह दौड़ने के बाद हांफ कर ठिठक जाती है। इसी कालोनी का पश्चिमी हिस्सा जहां पर समाप्त होता है वहां पटरियां, रेलवे सिग्नल्स और ट्रेन को दिशा दिखने वाला कैबिन आज भी है। आप इसे देखें तो आप को ऐसा लगेगा कि यह उदास है। उदास हो भी क्यों न। एक दिन यहाँ दस बजते न बजते नई भर्ती के चालक ,गार्ड आदि की चहल पहल शुरू हो जाती थी जो शाम ढले तक जारी रहती थी। कोयले वाला छुकछुक करता इंजन कू की गगनभेदी आवाज निकालता पहले मंथर गति से फिर तेजी से दौड़ने लगता। सीटी की लम्बी आवाज गूंजने लगती थी और इसी के साथ नये रेलवे कर्मी ट्रेन क सात हों वाली गतिविधियां सीखने लगते। ट्रेन रोकने के लिए केबिन मैं को लाल झंडी दिखानी थी लेकिन नया आदमी था ट्रेन सर पर आ गयी तो हड़बड़ी में हरी झंडी दिखा गया फिर बेचारा डांटा गया। लाइन मैन को ट्रेन आने से पहले लीवर गिरा कर लाइन बदलनी थी द्य बेचारा दो बार लाइन बदल गया जिससे ट्रेन दीवार से टकराते टकराते बची। ट्रेनर ने एक फर्लांग दूर से ललकारा-क्या करता है पाजी बेईमान। फिर खुद जा कर उसे बताया कि सावधानी से एक बार ही लीवर डाउन कारण से काम हो जाता है। गार्ड को सिखाया कि कब कौन सी झंडी कहाँ पर दिखानी है। पूरे दिन चहल पहल का माहौल रहता था। शाहजहांपुर महानगर नहीं था लेकिन रेलवे का ट्रेनिंग सेंटर रेलवे के मानचित्र पर विशिष्ट स्थान रखता था। बाद में वह दर्जा उससे छिन गया। ट्रेनिंग सेंटर मुरादाबाद चला गया और शहर के हिस्से में उदास कैबिन, हताश सिग्नल्स और धूप बरसात कोहरा झेलती पटरियां ही बचीं। इस स्थल एक पूरा का पूरा गमगीन नजारा मैंने अपन मित्र ज्ञानेंद्र मोहन ज्ञान के पैत्रक घर की छत से देखा था। जिज्ञासा करने पर हमारी ज्ञान और कमल मानव की साझी माता श्री गंगा देवी ने बताया था और यह भी बताया था कि उन्होंने वह दौर भी देखा जब यहां ट्रेनिंग से जुडी गतिवधियां संचालित होती थी। जैसा कि मैंने ऊपर कहा है कि अब इसके पुरावशेष बचे हैं जिन्हें देख कर हम उनके सुनहरे दिनों की याद भर कर सकते हैं या उन दिनों की कल्पना कर सकते हैं जब यहां सन्नाटा नहीं होता था। अब यह सब सन्नाटे में डूबा है और इसके दिन कभी बहुरेंगे, इसकी उम्मीद काम ही की जाती है अलबत्ता उम्मीद पर तो दुनिया ही कायम है। मित्रों आप को शहर की रेलवे लाइनों से जुडी पोस्ट याद होगी। इस पोस्ट को पढ़ने के बाद मेरे कई मित्रों ने मुझसे रेलवे स्टेशन से क्लोदिंग फैक्ट्री के भी जिक्र का आग्रह किया था। दरअसल मैं उसका जिक्र इसलिए नहीं किया था कि यह रेलवे लाइन आम आदमी के लिए नहीं थी बल्कि फैक्ट्री के सामान को लाने ले जाने के लिए 1914 में या उसके बाद डाली गयी थी। ऐसी ही एक रेलवे लाइन रोजा स्टेशन से रौसर कोठी स्थित चीनी मिल के अंदर तक 1910 के आसपास डाली गयी थी। उसका हरदोई मार्ग को काटता हुआ जो सिलसिला चीनी मिल के अंदर जा कर थमता है वह पूरा मैंने देखा है। अब यह दोनों रेल मार्ग इतिहास बन चुके हैं। अब इन पर भी कई दशकों से ट्रेन का आवागमन बंद हैं। चीनी मिल के कर्मचारियों अधिकारियों के लिए ही रोजा को अंग्रेजों ने रेलवे जंक्शन बनाया गया था जबकि शाहजहांपुर के स्टेशन को यह दर्जा नहीं हासिल था।

गुमनाम शहिदों को सामने लाना वर्तमान पीढ़ी का दायित्व

एसएस कालेज में स्वातंत्र्य समर के विस्मृत आयाम और व्यक्तित्व विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कॉलेज के इतिहास विभाग की ओर से स्वाधीनता संग्राम के विस्मृत आयाम और व्यक्तित्व, विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार शुभारम्भ हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बरेली कॉलेज बरेली के प्रो एके त्रिपाठी ने कहा कि 'भारत के स्वातंत्र्य समर में स्वाधीनता संग्राम सेनानियों द्वारा दी गयी आहुतियां मात्र एक ही आयाम से नही देखी जानी चाहिए, सम्यक दृष्टि वह है जो बहुआयामी है और जिसमे समग्र चिंतन के लिए सदैव स्थान बना रहता है।' कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जेएनयू की ग्रीक चेयर के प्रो अनिल कुमार सिंह ने कहा कि 'भारतीय इतिहास में अभी खोज की अपार संभावनाएं हैं चाहे प्राचीन भारत हो मध्यकालीन या आधुनिक भारत सभी में खोज के पर्याप्त अवसर और स्थान है। इतिहास के एक अध्यता को सदैव इन्हीं विस्मृति आयाम के अन्वेषण में प्रयासरत रहना होगा।'

महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो अनुराग अग्रवाल ने स्वागत भाषण में स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम वीरों के व्यक्तित्व और कृतित्व की खोज करने तथा उसे सामने लाने की आवश्यकता पर बल दिया। इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ विकास खुराना ने विषय स्थापना करते हुए कहा कि विस्मृत स्वतन्त्रता सेनानियों को स्मृति में लाना वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है ताकि भावी पीढ़ी अपने अतीत पर गर्व कर सके।

इस अवसर पर सेमिनार की शोध संक्षेपिका का विमोचन भी हुआ। सेमिनार के मध्यान्ह सत्र में एक ऑनलाइन एवं दो ऑफ्लाइन तकनीकी सत्रों का आयोजन भी किया गया। ऑनलाइन तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ अभिनव मिश्रा ने की एवं संचालन प्रो मृदुल पटेल व अवनीश चौहान ने किया। ऑफ्लाइन तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता डॉ सीमा गौतम एवम डॉ गिरजेश त्रिपाठी ने की एवं संचालन डॉ श्रीकांत मिश्रा व डा शालीन सिंह ने किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डा आर के आजाद ने कहा कि इस प्रकार की गोष्ठियों का आयोजन निरंतर किया जाना चाहिए ताकि गुमनाम शहीदों को इतिहास के पन्नों में दर्ज करके उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया जा सके। डा प्रशांत अग्निहोत्री के संचालन में हुए समारोह के अंत में कार्यक्रम संयोजक प्रो आदित्य कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संगीत विभाग की अध्यक्ष डॉ कविता भटनागर एवं छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में लखनऊ विश्वविद्यालय से डा बृजेश, बरेली कॉलेज से डा एमपी सिंह, कासगंज, बदायूं, जलालाबाद आदि स्थानों से अनेक शिक्षाविद तथा बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

इस दौरान डॉ धर्मवीर सिंह, डॉ पद्मजा मिश्रा, डॉ सीमा गौतम, धीरज कुमार रस्तोगी, डॉ मनोज मिश्रा, डॉ विकास पांडेय, डॉ गिरजेश त्रिपाठी, डॉ प्रतिभा सक्सेना नीलू कुमार डॉ विजय तिवारी डॉ रमेश चंद्र, डॉ शैलजा मिश्रा अखिलेश तिवारी रेनू बहुखंडी, अभिषेक बाजपेई, पवन गंगवार, अवनीश चौहान, मृदुल पटेल डॉ राजीव कुमार डॉ संदीप कुमार, डॉ सुजीत कुमार वर्मा, व्याख्या सक्सेना, डॉ शालीन कुमार सिंह, सहित बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं उपस्थित रहे। इतिहास विभाग की दो दिवसीय सेमिनार के समापन अवसर पर संयोजक डा दीपक गुप्ता ने बताया कि दो दिन में 132 शोध पत्र पढ़े गए। सेमिनार में विशेष सहयोग हेतु डा सीमा गौतम, डा प्रशांत अग्निहोत्री और धीरज रस्तोगी को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा अंगवस्त्र देकर सम्मानित भी किया गया।

/ सम्पादकीय /

संसद में सांसद के बिगड़े बोल, तार-तार होती मर्यादा

अभी तक सड़कों और गांव के गलियारों में भी नफरती भाषा का प्रयोग किया जाता रहा है। राजनैतिक दल अपने मंचों से भी विपक्षी दलों और अन्य समुदायों के खिलाफकभी कभार नफरती भाषा का प्रयोग करते दिखाई दिए लेकिन अब यह नफरती बयान संसद में भी गूंजने लगे है। हालांकि नफरती बयानों पर सख्त रुख दिखाते हुए सर्वोच्च न्यायालय कई मौकों पर इसे रोकने का निर्देश दे चुका है, मगर स्पष्ट है कि राजनेताओं ने इसे कभी गंभीरता से नहीं लिया। अब तो शायद सार्वजनिक मंचों पर भाषा की मर्यादा का भी खयाल रखने की जरूरत नहीं समझी जाती। इसी का नतीजा है कि सड़क की भाषा उठ कर संसद में पहुंच गई। दक्षिणी दिल्ली से भाजपा के सांसद रमेश बिधूड़ी ने संसद में अपने ही साथी, बसपा सांसद के बारे में जैसे अपमानजनक और अशोभन शब्दों का इस्तेमाल किया, वैसा अब तक कभी नहीं किया गया। इसे लेकर स्वाभाविक ही विपक्षी दल सरकार पर हमलावर हैं।

बिधूड़ी के भाषण को देख-सुन कर साफलगता है कि उन्हें संसद के पटल और मुहल्ले के नुक्कड़ पर चल रही बहस में कोई अंतर महसूस नहीं होता। संसद की अपनी मर्यादा है, उसके नियम-कायदे हैं। यहां तक कि संसद की भाषा तय है। वहां बहुत सारे शब्दों का इस्तेमाल वर्जित है। वहां किसी भी ऐसे शब्द का उपयोग नहीं किया जा सकता, जिसे असंसदीय करार दिया गया है। इसलिए वहां बोलने के लिए सांसद पहले से तैयारी करके आते हैं। ऐसा नहीं माना जा सकता कि बिधूड़ी इससे अनजान हैं। सरकार ने संसद का विशेष सत्र बुलाकर इस संकल्प के साथ नए संसद भवन में प्रवेश किया कि उसमें लोकतंत्र की मर्यादाएं और प्रगाढ़ होंगी, मगर विचित्र है कि उसी सत्र में बिधूड़ी का ऐसा आपत्तिजनक आचरण सामने आ गया। लोकसभा अध्यक्ष ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि अगर अगली बार से ऐसा आचरण सामने आया, तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी। विपक्षी दलों ने हंगामा किया तो पार्टी अध्यक्ष ने उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी करके पंद्रह दिन के भीतर जवाब देने को कहा। मगर विपक्षी दलों का तर्क है कि जब दूसरे दलों के नेताओं से सदन में मामूली चूक होती है तो भी उन्हें संसद से निलंबित कर दिया जाता है और बिधूड़ी ने एक साथी सांसद को सदन के पटल पर गाली दी, फिर भी उनके खिलाफकोई कार्रवाई क्यों नहीं की जा रही। उन्हें चेतावनी देकर क्यों छोड़ दिया गया? विपक्ष उनकी सदस्यता समाप्त करने की मांग कर रहा है। इस तरह लोकसभा अध्यक्ष की भूमिका पर भी प्रश्नचिन्ह लग रहा है। वहीं सत्ताधारी दल भाजपा की सबसे अधिक किरकिरी झेलनी पड़ रही है। दरअसल, यह पहला मौका नहीं है जब भाजपा के किसी नेता ने इस तरह किसी विशेष समुदाय के लोगों के लिए ऐसे आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया। भरी सभाओं के मंचों से कुछ सांसद और कई नेता ऐसे नफरती भाषण देते देखे-सुने गए हैं। सरेआम समुदाय विशेष के प्रति लोगों को हिंसक व्यवहार करने, उनके कारोबार-व्यापार को बंद कराने को उकसाते देखे गए हैं। उन्हें लेकर सर्वोच्च न्यायालय पार्टी और सरकार को सख्त हिदायत दे चुका है। मगर ऐसे नफरती बोल रुक नहीं पा रहे हैं, इसलिए विपक्ष को यह आरोप दोहराने का एक बार फिर मौका मिल गया है कि भाजपा समुदाय विशेष के प्रति नफरत का वातावरण बना कर राजनीतिक लाभ लेने का प्रयास करती है। अब जब नफरत की भाषा संसद के भीतर पहुंच गई है, तो स्वाभाविक ही पार्टी से ऐसे प्रतिनिधियों, नेताओं के प्रति सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग उठने लगी है। जब राजनेता खुद अपनी भाषा में संयम और मर्यादा का ध्यान नहीं रख पा रहे, तो उन्हें यह सलीका सिखाने की जिम्मेदारी कौन उठाएगा! फिलहाल नई संसद में भाजपा सांसद के बिगड़े बोल जहां एक ओर एक समुदाय विषेष को आहत कर रहे है वहीं देष की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा हो रहा है कि आखिर एक चुने हुए सांसद को उसका साथी सांसद संसद के भीतर गालियों की बौछार कैसे कर सकता है।

हम बहुत कुछ खो रहे हैं 'कुछ' पाने की चाहत में

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

आज हम वह सभी भौतिक सुख सुविधाओं का अपने दैनिक जीवन में उपयोग करने में सक्षम है जो कभी एक सपने के समान हुआ करता था फिर भी जब भी मैं अपने देश की स्थिति पर विचार करती हुं, दिल के किसी कोने में एक दर्द की लहर दौड़ जाती है आज हमारे पास पाने को बहुत कुछ है परंतु जो खो रहे हैं वो भी इस पाने की चाहत से बहुत मूल्यवान है। चलिए आज इस लेख के माध्यम से उन्हीं स्थिति के कुछ मुद्दों पर विचार विमर्श किया जाए और समझा जाए हम कहां सही कहां गलत हुएं। देश विकास कर रहा है पर किन मानदंडों व कीमत पर, पैदल पथ से हमने उन्नति कर आसमान में उड़ने के ख्वाब पूरे कर लिए लेकिन किस कीमत पर, आधुनिकता का गुमान इतना छाया की हम अपनी ही संस्कृति भूल गए एक दूसरे से आगे बढ़ने का नशा ऐसा छाया की अपने परायों की पहचान भूल गए, भेदभाव, जातिवाद, आरक्षण, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार जैसे रोगों से कब हमारी मानसिकता ग्रसित हो गई पता नहीं चला और जब परिणाम सामने आने लगे तो हम अपनी गलतियों से मुंह फेर एक दूसरे की गलतियां गिनने में एक दूसरे के दोष देखने में व्यस्त हो गए और अपेक्षा कर रहे हैं कि दोषारोपण से हम सुधार करने में सक्षम हो सकते हैं। मूलत: अगर एक दृष्टि मानव जीवन पर डाले तो ख्याल आता है कि जिन चीजों के भ्रम में हम इतना कुछ खो रहे हैं उनकी अहमियत हमारे जीवन में कितनी है,क्योंकि आमतौर पर चालीस

साल की अवस्था में 'उच्च शिक्षित' और 'अल्प शिक्षित' एक जैसे ही होते हैं। पचास साल की अवस्था में 'रूप' और 'कुरूप' एक जैसे ही होते हैं। साठ साल की अवस्था में 'उच्च पद' और 'निम्न पद' एक जैसे ही होते हैं। सत्तर साल की अवस्था में 'बड़ा घर' और 'छोटा घर' एक जैसे ही होते हैं। अस्सी साल की अवस्था में आपके पास धन का 'कम होना' या 'ज्यादा होना' एक जैसे ही होते हैं। नब्बे साल की अवस्था में 'सोना' और 'जागना' एक जैसे ही होते हैं। फिर भी आधुनिक होने की प्रतिस्पर्धा, एक दूसरे से आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा में हम जीवन को सामान्य रुप में जीना ही भूलते जा रहे हैं और उन कृत में लिप्त होकर जो हमारी पहचान को ही धुर्मिल कर रही है अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलते जा रहे हैं। आधुनिक होना गलत नहीं है और नहीं तकनीकों का उपयोग करना परंतु हर कार्य की अति नुकसान दायक ही होती है क्योंकि जीवन में रहस्य नहीं हैं जिन्हें आप सुलझाते फिरें। आगे चल कर एक दिन सब की यही स्थिति होनी है, यही जीवन की सच्चाई है।

चौन से जीने के लिए चार रोटी और दो कपड़े काफी हैं, पर बेचैनी से जीने के लिए चार गाड़ी, दो बंगले और तीन प्लॉट भी कम हैं। भौतिक सुख सुविधा से विकसित होना गर्व की बात है, परंतु विक्षिप्त मानसिकता से विकसित होना उतना ही हानिकारक, इसलिए बदलाव भौतिक वस्तुओं का करें, नैतिक मूल्यों का नहीं किसी की जाति, धर्म, संस्कृति किसी को गलत नहीं बनाती, गलत कृत, गलत आचरण, विक्षिप्त मानसिकता के शिकार व्यक्ति ऐसी अफ्वाहें उत्पन्न कर एक दूसरे के प्रति बैर भाव को बढ़ावा देते हैं, जीवित प्राणियों में मानव ही अपनी बुद्धि का प्रयोग करने में सक्षम है इसलिए अपनी स्वयं की बुद्धि का प्रयोग करें न किसी अन्य की बुद्धि का अनुसरण, अन्यथा मानव वो दिन दूर नहीं जब मानव और जानवर में भेद करना मुश्किल हो जाएगा।

गांधी जी की राजनीतिक यात्रा

धर्मवीर सिंह
शाहजहांपुर

गांधी जी जो कि हमारे देश के राष्ट्रपिता है एक कुशल नेतृत्व कर्ता एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एक नेता के रूप में उनके नेतृत्व में भारत आजाद हुआ तो शिक्षा के क्षेत्र में वर्धा शिक्षा (बेसिक शिक्षा, बुनियादी शिक्षा) के रूप में उनका अमूल्य योगदान है पत्रकारिता के क्षेत्र में इंडियन ओपेनियन हिंद स्वराज नामक पत्रों के प्रकाश रहे वही संस्थानों की स्थापना के क्रम में फिनिक्स आश्रम, टालस्टाय फार्म, सावरमती आश्रम आदि की स्थापना की। इस प्रकार गांधी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे अब हम इनके राजनीतिक जीवन पर प्रकाष डालेंगे।

गांधी जी 1893 में एक मुस्लिम व्यापारी अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने दक्षिण अफ्रीका गये। अफ्रीका में उस समय रंग भेद की नीति अपने चरम पर थी जिसमें काले गोरे लोगों के मध्य भेद भाव किया जाता था जिसके शिकार भारतीय भी थे। गांधी जी ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत दक्षिण अफ्रीका में ही की और उनके नेतृत्व में आंदोलन सफल भी रहा। गांधी जी का भारत आगमन 9 जनवरी 1915 को होता है उस समय की भारत की राजनीतिक स्थिति

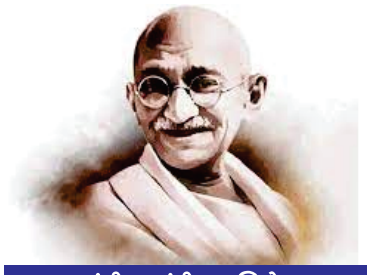

गांधी जयंती पर विशेष

देखे तो गरम दल, और नरम दल भारतीयों को आकर्षित नहीं कर सके फलत: इनके द्वारा चलाया गया कोई भी आंदोलन जन आंदोलन नहीं बन सका या यूं कहे कि समाज के सभी वर्गों को ये दल शामिल न कर सके। गांधी जी भारत आने के पष्चात लगभग 2 वर्षो तक भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करके वास्तविक स्थिति का अवलोकन करते है तत्पश्चात बिहार के चंपारण में प्रथम आन्दोलन में प्रतिभाग करते है तत्पश्चात अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन गुजरात का खेड़ा सत्याग्रह में सफल नेतृत्व करते है इतिहास में 1919 से लेकर 1947 का युग गांधी युग के नाम से जाना जाता है क्योंकि इस कालखण्ड में भारतीय राजनीति की बागडोर गांधी के हाथ में रही। इनके नेतृत्व में क्रमश: असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन हुए और भारत को आजादी मिली।

गांधी जी का शस्त्र था सत्य, अंहिसा, सत्याग्रह जब कभी आंदोलन में हिंसा हुई तो उन्होंने आंदोलन स्थगित कर दिया जैसे कि असहयोग आंदोलन चौरा चोरी कांड के बाद स्थगित होता है बदलती परिस्थितियों के अनुसार गांधी जी ने अपने आंदोलन का स्वरूप परिवर्तित किया करो या मरो का नारा दिया यानि कि हिंसा का समावेश भी आंदोलन में हुआ। इस प्रकार हम देखे है कि गांधी एक कुशल नेता थे जिन्होंने बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपने विचार धारा एवं आंदोलन के स्वरूप में भी परिवर्तन किया।

आध्यात्मिक ऊर्जा : परोपकार का महत्व

सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी

परोपकार का अर्थ है दूसरों की भलाई करना। मानव जीवन में परोपकार का बहुत महत्व होता है। समाज में परोपकार से बढकर कोई धर्म नहीं होता है। ईश्वर ने प्रकृति की रचना इस तरह से की है कि आज तक परोपकार उसके मूल में ही काम कर रहा है। परोपकार प्रकृति के कण-कण में समाया हुआ है। जिस तरह से वृक्ष कभी भी अपना फल नहीं खाता है, नदी अपना पानी नहीं पीती है, सूर्य हमें रोशनी देकर चला जाता है। इसी तरह से प्रकृति अपना सर्वस्व हमको दे देती है। वह हमें इतना कुछ देती है लेकिन बदले में हमसे कुछ भी नहीं लेती है। किसी भी व्यक्ति की पहचान परोपकार से की जाती है।

ईश्वर हमें प्रकृति द्वारा जीवन विकास के कई गुण सीखाना चाहते है, इसलिए उन्होंने प्रकृति के कण कण में परोपकार का महत्व समझाया है। प्रकृति के सभी घटक का उनके द्वारा किया गया कर्म सदैव दूसरों के लिए होता है। जैसे कि वृक्ष के ऊपर फल तो होते है लेकिन वो हमेशा दूसरों के लिए ही है । नदियां मनुष्य, पशु पक्षी, और पेड़ पौधों को जीवन देने के लिए निरंतर बहती रहती है। सूर्य हमारे जीवन का एकमात्र स्त्रोत है लेकिन वो हमेशा दूसरों को ऊर्जा देने के लिए खुद जलता है। रात में चन्द्रमा शीतलता प्रदान करने के लिए ही उदित होता है। अगर आपके पास कोई चीज है तो आपको स्वयं को भाग्यशाली समझना चाहिए कि आपके पास वह चीज है। जिसकी आवश्यकता किसी और को भी है और उसे आपसे वह चीज मांगनी पड़ रही है। जिंदगी यदि परोपकार के लिए जाएगी तो आपको कोई भी कमी नहीं रहेगी। परोपकार करने से मन और आत्मा को बहुत शांति मिलती है। परोपकार से भाईचारे की भावना और विश्व-बंधुत्व की भावना भी बढती है। मनुष्य को जो सुख का अनुभव लोगों की मदद करने में होता है, वह किसी और काम को करने से नहीं होता है। पुराणों के अनुसार महान व्यक्तियों ने परोपकार के लिए अपने शरीर का त्याग कर दिया। वृत्तासुर वध के लिए महर्षि दधीचि ने इंद्र को प्राणायाम द्वारा अपना शरीर अर्पित कर दिया था। इसी प्रकार महाराज शिवि ने एक कबूतर के लिए अपने शरीर का मांस भी दे दिया था। ऐसे महापुरुष धन्य हैं जिन्होंने परोपकार के लिए अपने प्राण त्याग दिए. संसार में अनेकानेक महान कार्य परोपकार की भावना से ही हुए है।

मनुष्य जीवन ईश्वर का आशीर्वाद है। इसलिए हमें अपनी शक्ति और सामर्थ्य का उपयोग लोगों की सेवा और उनके दु:ख दर्द को मिटाने के लिए करना चाहिए। हमें हमारे मित्रों, परिचितों और अपरिचितों के लिए हमेशा परोपकार की भावना होनी चाहिए। धरती को स्वर्ग बनाने व सुनहरे भविष्य के लिए अपने बच्चों को बचपन से ही परोपकार के पाठ सिखाने चाहिए। परोपकार के लिए किये गए कार्य के आनंद की तुलना किसी भी भौतिक सुख से नही की जाती। जीवन की सार्थकता उसी में है की हम अपना जीवन लोगों की भलाई के लिए अर्पण करें। परोपकार हमें महापुरुषों की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। इसलिए हमें परोकारी बनना चाहिए।

वर्तमान समय में जल संरक्षण की जरूरत

पूजा गुप्ता, मिर्जापुर

भविष्य में जल की कमी की समस्या को सुलझाने के लिये जल संरक्षण ही जल बचाना है। भारत और दुनियां के दूसरे देशों में जल की भारी कमी है जिसकी वजह से आम लोगों को पीने और खाना बनाने के साथ ही रोजमर्रा के कार्यों को पूरा करने के लिये जरूरी पानी के लिये लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। जबकि दूसरी ओर, पर्याप्त जल के क्षेत्रों में अपने दैनिक जरुरतों से ज्यादा पानी लोग बर्बाद कर रहें हैं। हम सभी को जल के महत्व और भविष्य में जल की कमी से संबंधित समस्याओं को समझना चाहिये। हमें अपने जीवन में उपयोगी जल को बर्बाद और प्रदूषित नहीं करना चाहिये तथा लोगों के बीच जल संरक्षण और बचाने को बढ़ावा देना चाहिये।

धरती पर जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिये जल का संरक्षण और बचाव बहुत जरूरी होता है क्योंकि बिना जल के जीवन सभव नहीं है। पूरे ब्रह्माण्ड में एक अपवाद के रुप में धरती पर जीवन चक्र को जारी रखने में जल मदद करता है क्योंकि धरती इकलौता अकेला ऐसा ग्रह है जहाँ पानी और जीवन मौजूद है। पानी की जरुरत हमारे जीवन भर है इसलिये इसको बचाने के लिये केवल हम ही जिम्मेदार हैं। संयुक्त राष्ट्र के संचालन के अनुसार, ऐसा पाया गया है कि राजस्थान में लड़कियाँ स्कूल नहीं जाती हैं क्योंकि उन्हें पानी लाने के लिये लंबी दूरी तय करनी पड़ती है जो उनके पूरे दिन को खराब कर देती है इसलिये उन्हें किसी और काम के लिये

समय नहीं मिलता है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्डस् ब्यूरो के सर्वेक्षण के अनुसार, ये रिकार्ड किया गया है कि लगभग 16,632 किसान (2,369 महिलाएँ) आत्महत्या के द्वारा अपने जीवन को समाप्त कर चुकें हैं, हालांकि, 14.4 प्रतिशत मामले सूखे के कारण घटित हुए हैं। इसलिये हम कह सकते हैं कि भारत और दूसरे विकासशील देशों में अशिक्षा, आत्महत्या, लड़ाई और दूसरे सामाजिक मुद्दों का कारण भी पानी की कमी है। पानी की कमी वाले ऐसे क्षेत्रों में, भविष्य पीढ़ी के बच्चे अपने मूल शिक्षा के अधिकार और खुशी से जीने के अधिकार को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। भारत के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते, पानी की कमी के सभी समस्याओं के बारे में हमें अपने आपको जागरुक रखना चाहिये जिससे हम सभी प्रतिज्ञा ले और जल संरक्षण के लिये एक-साथ आगे आये। ये सही कहा गया है कि सभी लोगों का छोटा प्रयास एक बड़ा परिणाम दे सकता है जैसे कि बूंद-बूंद करके तालाब, नदी और सागर बन सकता है। धरती पर जीवन का सबसे जरूरी स्रोत जल है क्योंकि हमें जीवन के सभी कार्यों को निष्पादित करने के लिये जल की आवश्यकता है जैसे पीने, भोजन बनाने, नहाने, कपड़ा धोने, फसल पैदा करने आदि के लिये। बिना इसको प्रदूषित किये भविष्य की पीढ़ी के लिये जल की उचित आपूर्ति के लिये हमें पानी को बचाने की जरुरत है। हमें पानी की बर्बादी को रोकना चाहिये, जल का उपयोग सही ढंग से करें तथा पानी की गुणवत्ता को बनाए रखें।

अलौकिक, मर्यादित, उदात्त और निस्वार्थ है कृष्ण राधा का प्रेम

पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव
लखनऊ

राधा अष्टमी पर विशेष

कृष्ण और राधा। प्रेम के प्रतिमूर्ति। इसे संयोग कहा जाए या दैवीय विधान कि कान्हा और राधा का जन्म भाद्र माह में ही क्रमशः कृष्ण और शुक्ल पक्ष में हुआ था। दोनों का नाम साथ में आते ही प्रेम का एक मनमोहक अद्वितीय बिंब मन मस्तिष्क में छा जाता है। एक ऐसा प्रेम जो अलौकिक है, मर्यादित है, उदात्त है, निःस्वार्थ है, जहां भावनाओं का महत्व है, जहां एक दूसरे के लिए समर्पण भाव है, जहां किसी प्रकार का दुराव नहीं है, जहां सिर्फदेना है, देना है और देना है। वृषभानुजा और नंदनंदन अद्वितीय, पावन मानव प्रेम के प्रतीक और पर्याय बन गए हैं। संसार में विवाहेत्तर किसी के भी प्रेम को वह स्थान नहीं मिला जो कान्हा और राधा के प्रेम को मिला। प्रेम कितना निश्छल, कितना पवित्र, कितना मनो मुग्धकारी, कितना रसपगा, कितना नटखट और कितना अनिर्वचनीय हो सकता है, यह राधा कृष्ण के प्रेम में देखा जा सकता है। प्रेम की कोई थाह नहीं, कोई सीमा नहीं। राधा कृष्ण का प्रेम, प्रेम की पराकाष्ठा है, अनंत ऊंचाई है। प्रेम में सुध-बुध खो कर राधा 'राधा-राधा' पुकारती हैं और कान्हा 'कान्हा-कान्हा'। वे एकाकार हो गए हैं। प्रेम का ऐसा रूप वंदनीय है, पोषणीय है इसीलिए यह प्रेम का पर्याय बनकर जग में पूजनीय है।

शाबाशी

लघुकथा

मीरा जैन, उज्जैन

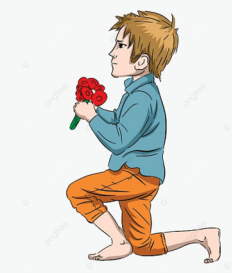

नये आए कैदी की फाइल और फोटो देखते ही पुनीत चौक गया और तुरंत ही कैदी तक पहुंच आश्चर्यजनक मुद्रा में सवाल किया - 'सोमण ! तुम यहां , मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है लगता है किसी गलतफहमी में तुम पर केस बन गया है ?' नजरें नीची कर सोमण ने जवाब दिया- 'यह सत्य है सर ! मैं मोबाइल चुराते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया हूं' 'ओ- हो ! बचपन में तो तुम मेरी ही तरह पढ़ने में अच्छे थे तुम्हारा घर परिवार भी आर्थिक दृष्टि से ठीक ठाक था फिर तुम इस रास्ते पर ?' सोमण ने भरे गले से स्पष्टीकरण दिया- 'सर ! आपको याद है एक बार हम दोनों ने ही पड़ोस वाले अंकल के बगीचे से चुपचाप ढेर सारे गुलाब तोड़ लिए थे और उन गुलाबो को लेकर हम दौड़ते हुए अपने-अपने घर यह सोच पहुंच गए थे कि घर पर पूजा चल रही है वहां भगवान को चढ़ा देंगे, आपके हाथों में फूल देख आपको बहुत डांट पड़ी थी और आपके पापा ने तुरंत ही आपको अंकल के यहां माफी मांगने भेज दिया था और आइंदा ऐसी हरकत नहीं करने को कहा किंतु मेरे साथ उल्टा हुआ मेरे हाथों में खिले हुए ढेर सारे गुलाब देख परिजन बेहद खुश हो गए थे और मुझे पूजा के वक्त इतने सुंदर गुलाब लाने के लिए खूब शाबाशी दी बस ! यही शाबाशी मेरे जीवन का कांटा बन गई।'

फ़र्क

शीला श्रीवास्तव, इंदौर

आजकल अपने शहर में सफाई अभियान कुछ ज्यादा नहीं चल रहा है जी ?' मधु अपने पति प्रभाकर से बोली। 'तुम्हें पता नहीं है क्या? अखबार नहीं पढ़ती हो क्या? अपने शहर में प्रवासी भारतीयों का सम्मेलन होने वाला है। इससे अपने शहर में रोजगार के और अवसर खुल जायेंगे। ये लोग अपने शहर में इन्वेस्ट जो करने वाले हैं।' प्रभाकर हर्षाते हुए बोला। 'पता है मुझे। देश- दुनिया की जानकारी मैं भी रखती हूं। ऐसी भी क्या साफ-सफाई, जिसमें गरीबों का ही सफाया कर दी जाए। जहां सम्मेलन होने वाला है उस जगह से सारी गुमटियां एवं ठेले हटा दिए गए हैं। गरीबों की रोजी- रोटी छीनकर पता नहीं कौन सा कीर्तिमान स्थापित करना चाहती है सरकार?' मधु गुस्से में बोली। 'वो क्या है न भाग्यवान, हमारे घर जब मेहमान आते हैं तो उनपर अपना प्रभाव जमाने के लिए हम अपने घर की साफ-सफाई करते हैं और उसे अच्छी तरह सजाते

लघुकथा

हैं, उस दौरान हमें जो भी फलतू और गंदी चीजें दिखती है उसे हम हटा देते हैं। बस वही समझ लो, प्रवासी भारतीयों पर अपना प्रभाव जमाने के लिए शहर की साफ-सफाई और सौंदर्यीकरण किया जा रहा और इसके बीच में जो भी आता है उसे हटाना पड़ता है।' प्रभाकर ने अपना तर्क दिया। 'तो क्या सामान और इंसान में कोई फर्क नहीं?' मधु के सवाल का प्रभाकर के पास कोई जबाब नहीं था।

मैं सांड हूँ ! जहाँ जाइएगा मुझे पाइएगा...?

प्रभुनाथ शुक्ला, भदोही

व्यंग्य

हमारे गांव-जवार में लठ्ठन गुरू का जलवा है। वह लम्बी कद काठी के गबरू जवान हैं। हालांकि उमर उनकी साठा है, लेकिन अपने को वह किसी गबरू जवान से कम नहीं समझते। फीट भर की हासिएदार मुंछे और छह फिट की लाठी रखते हैं। सिर पर कलकत्तईया गमछा और पूरेवदन पर पाव भर कड़वा तेल की मालिश करते हैं। जहाँ चाहते हैं वहीं मुंह मारते हैं और जिसको जो चाहें बोल देते हैं। लठ्ठन गुरू को लोग छुट्टे सांड के उपनाम से भी बुलाते हैं। वेचारे जुवान से थोड़ा पातर हैं, लेकिन गलत कभी बर्दास्त नहीं करते हैं। उनकी निगाह में अगर कहीं गलत दिख गया तो पूरे छुट्टे सांड बन जाते हैं। फिर उनकी निगाह में आने वाले की ऐसी-तैसी हो जाती है। इसलिए हमारे गांव-जवार में लोग उनका बड़ा अदब करते हैं।

वैसी भी हमारी काशी तो सांडो की जन्म और कर्म स्थली है। काशी में जहाँ जाइएगा वहां बस सांड ही सांड ही पाइएगा। बाबा दरबार से लेकर गंगा घाट तक। चौराहे से लेकर सब्जी मंडी और गली तक सांड ही सांड दिख जाएंगे। कभी-कभी तो जब अपने पर उतर आते हैं तो पूरी सड़क और गली में जाम लग जाता है। ठेंगे से जाम लगे अलमस्त पागुर करते और बीच सड़क पर उंघते दिख जाएंगे। आप हॉर्न बजाइए या घंटा कोई फर्क नहीं। काशी वालों का जीने का अंदाज ही कुछ अलग है। यहाँ की विंदास जिंदगी सांड की मस्ती से कम नहीं है। क्योंकि यहाँ बाबा की कृपा बरसती है। वैसे भी यहाँ के साहित्यकार भी अपने नाम के आगे सांड लगाना नहीं भूलते हैं। राजनीति में भी यहाँ से जो चुनकर जाता है जाता है वह छुट्टा सांड हो जाता है। आप गलत मतलब मत लगाइएगा हमारे गांव-जवार में सांड बल और शौर्य का प्रतीक है। वैसे भी आजकल सांडों की कमी नहीं हैं। हर कोई सांड ही बनाना चाहता है। अब शेर उतना पसंद नहीं किया जा रहा जितना छुट्टा सांड। इसलिए हर कोई छुट्टा सांड ही बनाना चाहता है। वैसे भी हमारे यहाँ सांडो का आतंक है। लोकतंत्र में कुछ सियासी फैसलों की वजह से हाल के दिनों में सांडों की आबादी बढ़ी है। जिसकी वजह से सांडों का चरित्र अब इंसानों में घूस गया है। किसानों की फसल आराम से सांड चट कर जाते हैं। किसान अगर सांडो का विरोध करता है तो उसकी हड्डी-पसली तीतर-वितर हो जाती है। हुंकाराते और अखड़ाते सांड उसे छोड़ते नहीं हैं। वैसे भी सांड हमारी राजनीति का अहम मुद्दा है। चुनावी मौसम में तो सियासी सांडो और असली सांडो से कई बार हेलीपैड और चुनावी सभाओं में मुकाबला हो चुका है। सत्तापक्ष के अपने सांड और विपक्ष के अपने सांड हैं। बिनादल वाले भी खुद को स्वच्छंद सांड समझते हैं। चुनाव के बाद किसी दल का बहुत कम है तो ऐसी प्रजाति के सांड अवसर का लाभ उठाकर सम्बंधित दल के गले लग जाते हैं। अब आप इन्हें अवसरवादी सांड से परिभाषित मत कीजिएगा।

बदलते परिवेश में हमारे समाज में स्वच्छंद सांडों की समस्या सबसे बलवती हो गई है। यह गली-चौराहे, स्कूल-कॉलेज हर जगह आवारगी करते दिख जाएंगे। यह अपने माँ-बाप की बिगडैल औलादें हैं। जिन्हें आप लुच्चे-लफंगे जैसे विशेष विशेषण से सम्बोधित कर सकते हैं। हमारे गांव-जवार में इनके लिए एक शब्द सोहदा है जिसका प्रयोग इनके लिए किया जाता है। आजकल ऐसे सांड बेलगाम हो चले हैं। कानून की लाख कोशिश के बाद भी नपुंसकों की औलादें सुधरने का नाम नहीं लें रहीं हैं। आपरेशन मजनू भी इनका कुछ नहीं बिगाड़ पा रहा। राह चलती बेटियों को निशाना बना रहें हैं। बेटियों का दुपट्टा खींच बेलगाम सांडो ने तांडव मचा रखा है। अब देखना है ऐसे बेलगाम सांडो पर बाबा का बुलडोजर वाला सांड कब हुंकार मारता है।

संविधान सदन

यह एक सम्मान है,
विरासत को आगे बढ़ाकर,
देश को गौरवान्वित करने का,
एक खूबसूरत अहसान है,
इतिहास गवाह है,
खूबसूरत व बेहतरीन प्रतीक बनकर,
देश और दुनिया के सामने,
आज भी यह भवन गौरवान्वित महसूस कराती है,
निर्माण और निर्देशन में,
सबसे प्रखर पहचान बनाने वाली ताकतों में,
खुद को खुद से रुबरु कराती है।
यहां जन्नत स्वरूप में सजी हुई,
हम सब भारतीयों को इसकी अहमियत से,
एक बड़ा-सा उपकार मिला,
सद्भाव और संस्कार को,
सबसे प्रखर पहचान मिली,
नजदिकियां सामने खड़ी-खड़ी रहीं,
अपनत्व विवेक और विश्वास की धारा बढ़ती रही,
इसने परिवर्तन लाकर,
खूबसूरत पहचान बनाई,
दुनिया भर में जागृत लोकतंत्र की,
उन्नत प्रयास कर संसार में नाम कमाई।
विरासत को शत-शत नमन,
हृदय तल से अभिभूत होकर,
हम सब करते हैं अभिनन्दन।
यह विरासत बनेंगी एक सीख हमारी-आपकी,
दुनिया में सबसे आगे रहेंगी।
प्रजातंत्र को यहां सम्मान मिलता रहेगा,
इसकी अलख जलती हुई रहेंगी।

अशोक शर्मा, पटना

गाँव विकसित हो रहा है

हेतुमय बरसी कृपा है गाँव विकसित हो रहा है ।
सड़क, जल, बिजली कि शौचालय बने आवास पक्के।
खूब खाता, मुफ्त रुपये भी गिरे आकर ठसक के।
दाल चावल चाय चीनी गैस सब कुछ है चकाचक,
बस हुए निर्वीर्य बलशाली सभी मुस्टंड छक्के।

मुफ्तखोरी, वाह! पूरा गांव प्रमुदित हो रहाहै।
जो कभी छूते न थे बाजार का वे खा रहे हैं।
जाम ठेले पर रखा मोमोस भी गरमा रहे हैं।
राजरानी द्वार पर आकर खड़ीं संकेत करतीं,
नाश्ते में लिजलिजे नूडल्स राजा ला रहे हैं।

भाल पर धर हाथ चिंता बहुत चिंतित हो रहा है।
वाह! शिक्षा से लबालब गाँव की सब लड़कियां है।
सौम्य तुलसी से उड़ीं वे गगनचारी तितलियां हैं।
द्वार खोले,उठ रहा ग्रामीण संस्कृति का जनाजा,
नई विण्डो चौट में कुछ झिड़कियां कुछ सिसकियाँ हैं।

दृश्य में उद्दाम वैश्विक भाव व्यंजित हो रहा है।
खूब !बरगद के तले आसीन कुर्सी में फंसा है।
वह नशेड़ी आत्मा ही हर युवक का देवता है।
धन्य परधानी कि कच्ची खिंच रही वरसों वरस से,
और क्या सन्देह नेता को पुलिस को सब पता है।

नहर सुविधा की कटी है खेत सिंचित हो रहा है।

कमल 'मानव', शाहजहांपुर

गजल

साथ मेरा उसे जँचा ही नहीं.
फिर तो ये दिल कहीं लगा ही नहीं।
फेरकर मुँह निकल गया है वो,
जैसे मुझसे कभी मिला ही नहीं।
इन दिनों जेब है मेरी खाली,
दोस्त रखते हैं राब्ता ही नहीं।
देख डाले हैं इश्क के रंग-ढंग,
इसलिए आ रहा मजा ही नहीं।
पी चुका हूँ शराब मैं इतनी,
ज्ञान होता है अब नशा ही नहीं।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

गजल

नहीं कुछ था तो अपने पास क्या था.
तेरी रहमत थी अपना हौसला था।
उसी ने मुस्कुराकर हाथ झटका,
मैं कसकर हाथ जो पकड़ा हुआ था।
जमाना क्यों उसे सर पर बिठाए,
उसे आदत थी वो सच बोलता था।
तुम्हारे साथ होना ही था धोखा,
कभी तुमने भी तो धोखा किया था।
विदा बेटी हुई 'ऋतुराज' घर से,
पिता खुद से लिपटकर रो रहा था।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

चुप हैं नीति न्याय के ज्ञाता

चुप हैं नीति न्याय के ज्ञाता, मौन खड़े रणधीर
केवल मनमोहन ने समझी, द्रुपद सुता की पीर
सोना हारे, चाँदी हारे,
हार गए हथियार
सिंहासन के सँग में हारे,
पत्नी राजकुमार

शकुनि सभा में छोड़ रहा है मनमानी के तीर
केवल मनमोहन ने समझी द्रुपद सुता की पीर
द्रोणाचार्य, भीष्म साधे हैं,
बस अधरों पर मौन
भीगी आँखें आस लगाएँ
लाज बचाए कौन

अडिग धर्म पर खड़े युधिष्ठिर ले नैनों में नीर
केवल मनमोहन ने समझी द्रुपद सुता की पीर
छल से बल को निर्बल रक्खा
चल विध्वंसी चाल
दुर्योधन के आगे बेबस
हैं कुंती के लाल

सबके सम्मुख खींच रहा देवर भाभी का चीर
केवल मनमोहन ने समझी द्रुपद सुता की पीर

पीयूष शर्मा, शाहजहांपुर

जिंदगी के घने जंगलों में मुसल्सल पुकारती हुई गजलों का संग्रह 'तुम्हीं से जिया है'

अलिफमीम 'आरजू'
समीक्षक

रवायती और जदीदी गजलों पर तवाजुन बनाते हुए चलने वाले शायर सुभाष पाठक 'जिया' को कौन नहीं जानता। अभी कुछ दिनों पहले ही उनकी गजलों का ताजा मजमुआ 'तुम्हीं से जिया है' पढ़ने का शरफहासिल हुआ। इससे पहले उनका उर्दू गजलों का एक खूबसूरत मजमुआ 'दिल धड़कता है' मंजरे आम पर आया है जिसे मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी की जानिब से शाया किया गया है। 'तुम्हीं से जिया है' संग्रह की जियादातर गजलें या यूं कहें कि सभी गजलें जिया जी ने एहसास में इस कदर डूब कर कही हैं कि उनके अशआर में अलामती अल्फाज की गहरी मानवियत हमारे दिलों में गहराई तक असर छोड़ती है।

उनवान-गजल के ये शेर देखिए -**चलो आइने से मिलो और खुद को निहारो संवारो तुम्हीं से जिया है, थकन को उतारो न यूँ थक के हारो वफा के सितारो तुम्हीं से जिया है, जरा सा ही कंकर मचा दे समंदर में हलचल मेरे जुगनुओ तुम ये सोचो, अंधेरी है रातें मगर रोशनी का कोई तीर मारो तुम्ही से जिया है।**

किताब की पहली गजल का पहला ही शेर क्या खूब कहा है -**धूप ढल जाती है घटाओं में, ये असर होता है दुआओं में।**

दिलों में उम्मीद जगाती हुई अनोखी रदीफकी ये गजल किसका ध्यान अपनी तरफ न खींचेगी भला -तू चाहता है जो मंजिल की दीद सांकल खोल, सदाएं देने लगी है उम्मीद सांकल खोल । और ये -क्या ही खूबसूरत शेर है, जिसे ठहर कर महसूस करने का जी होता है -कोई दामन कोई शाना होता, मेरे अश्कों का ठिकाना होता

सुभाष पाठक जिया जिंदगी की तल्ख हकीकत को अपनी शायरी में इस तरह पेश करते हैं जिस तरह हजारों कांटों के बीच में फूल खिलते हैं। उनके तखलीकी शऊर में जिन्दगी की तवानाई और तल्खी-ए-जमाना की रूदाद शामिल है। कुछ शेर पेश हैं -**वही मुझको नजरअंदाज करते हैं, जो कहते हैं कि तुम पर नाज करते हैं, दर्द से जां निकल गई लेकिन तीर का क्या करूँ,नहीं निकला। दिल पे क्या-क्या सितम नहीं गुजरे, शुक्र कीजे कि हम नहीं गुजरे, दुश्मनी में ही सही वो ये करम करता रहा, आइना मुझको दिखा कर ऐब कम करता रहा।**

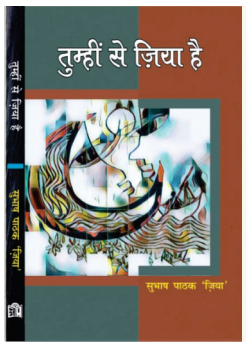

सुभाष पाठक 'जिया'
गजलकार

पुस्तक
'तुम्हीं से जिया है'
गजलकार
सुभाष पाठक 'जिया'
समीक्षक
अलिफमीम 'आरजू'
प्रकाशन
अभिधा प्रकाशन

सुभाष जी ने अपने आसपास जो हालात महसूस किए उन्हें तशबीहात और अलामात के साथ अपनी गजलों में बखूबी पेश किया। **दिल के रिश्ते दिमाग तक पहुँचे, साफचेहरे भी दाग तक पहुँचे, सूरज जब दिन की बातों से ऊब गया, पर्वत से उतरा दरिया में डूब गया।** सुभाष पाठक 'जिया' के यहां मुहब्बत के नाजुक मफ्हूम भी बहुत खूब मिलते हैं। आज तितली ने कह दिया खुल के, उसको नखरे पसंद हैं गुल के, आम की डाल यूँ न इतरा तू, दोस्त हम भी रहे हैं बुलबुल के, आज शब चाँद ने कहा मुझ से, अपनी छत पर उतार लो मुझको। यदि बारिश कम हो तो उसके बाद बहुत उमस होती ही है शायद इसीलिए रोने से मना किया जाता है लेकिन बादलों के खुलकर बरस जाने के बाद हल्का महसूस होता है तभी तो जिया कहते हैं -खुश्क आँखों का रोना भी क्या है, आँसुओं से करें वुजू रोयें। जेरे नजर मजमुए, 'तुम्हीं से जिया है' से ऐसे बहुत से अशआर बतौर मिसाल यहां पेश किये जा सकते हैं जिनमें जिया की सियासी समाजी शऊर की झलक साफतौर पर दिखाई देती है। उनके यहां फर्द और मआशरे के दरमियान कमजोर होते हुए रिश्तों का दर्द भी है और जवाल पजीर तहजीबी कद्रों का मलाल भी क्योंकि वो एक साफ सुथरी सोच के हामी है लिहाजा दूसरों से भी वही उम्मीद करते हैं। यहाँ सुभाष पाठक 'जिया' की शायरी के मुख्तलिफगोशों पर खातिर-ख्वाह रौशनी डालने की कोशिश की गई है मगर मुझे एहसास है कि उनकी शायरी के दूसरे कई पहलू इस तब्सिरे में शामिल नहीं हो सके। उनका तखलीकी सफर अभी कई और मंजिलें तय करेगा। मुझे उम्मीद है कि वो आइंदा 'तुम्हीं से जिया है' से आगे का सफर जारी रखेंगे। उनकी गजलों का यह मजमुआ कारईन के हलकों में पजीराई हासिल करेगा। उनके अशआर के साथ ही अपनी बात खत्म करती हूँ। रौशनी में चराग का मतलब, कुछ नहीं तीरगी से यारी है, हम वो पत्थर उठाए फिरते हैं, 'मीर' जिसको कहे कि भारी है।

दूब का फूल

मेरे भीतर
जो स्पंदित थी
एकदिन उस साँस को
बाहरी हवा क्या मिली बस
हरी होकर दूब सी बढ़ने लगी
जिसमें अदृश्य फूल खिलने लगी
बेपरवाह सी
कोमल सी नोंक पर
शब की हथेली से
टपकते हुए
नन्हीं बूँदे उसकी नोंक पर
जा बैठी
दिन के उजाले से
सारी रश्मियों को
भरकर अपने भीतर
समेटे हुए
वह भूल गई
कि उसे खो जाना है
किसी ने मंत्रमुग्ध हो
स्नेह की बौछार कर दी
बूँदे जरा ठिठक सी गई
पर इस....
प्रेम में डूबकर
इठलाना कौन न चाहे
बूँदे इठलाती रही
हवाएँ सहलाती रही
जैसे-जैसे वक्त बढ़ता रहा
बूँदे धीरे-धीरे अपना
अस्तित्व खोने लगी
प्रेम रुपी बूँद सूख चुकी थी
तो दूब का मर जाना भी तय था
और वह फूल जिसे किसी ने
नहीं देखा
उसका क्या मुरझाना
और क्या खिलना...

सपना चन्द्रा, भागलपुर

है ऐसी अभिलाषा मन की

हर सुबह शाम और आठों याम,
बस स्मृति तेरी करता हूं।
हर काम हमारे पूरे हो,
प्रभु नाम तुम्हारा जपता हूं।

है ऐसी अभिलाषा मन की,
स्मृति तेरी बनी रहे।
नाम तुम्हारा जपूं हृदय से,
कृपा तुम्हारी बनी रहे।

दुख तो हैं प्रभु बहुत घनेरे ,
शरण आपकी हूं मैं तेरे।
नैया पार करो प्रभु मेरी,
मैं अब हूं प्रभु शरण में तेरी।

जो दया आपकी बनी रहे ,
हर काम को मैं कर जाऊंगा।
हर पल मैं याद करूं तुमको,
बस स्मृति तेरी बनी रहे।

तेरी अनुपम सूरत को,
हर रोज निहारा करता हूं।
सुबह शाम और आठों याम,
बस नाम आपका जपता हूं।

पुरूषोत्तम अवस्थी
शाहजहांपुर

आंसुओं से हम अपने दुख-दर्द को हर सकते हैं,
इनसे मन के हर गम को व्यक्त कर सकते हैं,
गौरव और खुशी के मनोभाव,जो बांट नहीं सकते,
उन्हें भी आंसुओं से अभिव्यक्त कर सकते हैं!

ममता और समता के प्रतीक हैं ये आंसू,
दु:ख-सुख दोनों में दिल के करीब हैं ये आंसू,
आदमी के एहसासों के रफीक' हैं ये आंसू,
इन्सानियत की हिफाजत में शरीक हैं ये आंसू!

ऊषा शुक्ला, नोएडा

लोक पहल
रचनात्मक आमंत्रण
अगर आपके मन में ऐसा कोई विचार है जो समाज को कोई संदेश दे सके या आपको कहानी, प्रेरक प्रसंग, चुटकुले, या शायरी लेखन में जरा भी दिलचस्पी है
आप चाहते हैं एक ऐसा मंच जहां आपकी रचनाएं निरंतर प्रकाशित हो सके तो 'लोक पहल' आपको यह मंच दे रहा है। अपनी कोई भी रचना हो या समसामयिक विषय पर लेख देर न करें उठाएं कलम लिखे और भेज दे हमें हमारी ईमेल या व्हाट्सएप पर
Write to us : lokpahalspn@gmail.com
9935740205, 9455152599

जीवन रूपी बसंत

जीवन रूपी बसंत में सिर्फफूलों का खिलना, नहीं होता
फूलों का खिलना भी कांटों के बीच होता है।
जीवन रूपी बसंत में सिर्फएक ही मौसम नहीं होता
एक मौसम जाते हैं तो दूसरे मौसम आ जाते हैं।
जीवन रूपी बसंत में कभी धूप मिलती है तो,
कहीं शीत मिलती है कभी-कभी तो
तन मन भी भिंज जाते हैं।
जीवन रूपी बसंत में कभी सुख मिलते हैं तो,
कभी दुख मिलते हैं सुख -दुख का
ये आंख मिचौली चलते रहते हैं।
जीवन रूपी बसंत में कभी बचपन आते हैं तो,
कभी किशोरावस्था तो कभी
जवानी तो कभी बुढ़ापा आते हैं।
जीवन रूपी बसंत में यही
क्रम यही सिलसिला चलता रहता है
जीवन का कारवां चलते रहता है।

विभा कुमारी सिन्हा, जमशेदपुर

चलो यारो मिल के

चलो यारो मिल के
फिर महफिल सजाये
उस दिलरुबा के नाम पे
तुम को, हम पिलाये
चले आ रहे देखो, वो
जुल्फो को लहराये
कभी पलको को उठाये
कभी पलको को गिराये
उसके होठो की लाली को
अगर सन्धया की लाली से मिलाये
कौन ज्यादा सुर्ख है
ये कैसे हम बताये

मलय चक्रवर्ती
लखनऊ

हम आप और रसोई

रेसिपी वूमेन इम्यूनिटी बूस्टर पाउडर

महिलाए सब का ख्याल रखती लेकिन अपना खयाल रखने का उन के पास समय नहीं मिलता। अगर महीने में एक बार ये पाउडर बना ले इस ले इस्तेमाल से महिलाओ में अंदरूनी शक्ति महसूस होती है। महिलाओ को अपना भी पूरा खयाल करना चाहिए।

जैसा की मौसम के बदलाव से कई प्रकार की छोटी-छोटी बीमारियां घेर लेती है। अगर हमारी इम्यूनिटी पॉवर सही है तो इन छोटी छोटी बीमारियों का हम पर कोई असर नहीं पड़ता। इम्यूनिटी पॉवर को बढ़ाने के लिए एक आसान सा पाउडर बनाए वो भी अपने रसोई घर की सामग्रियों से इस का एक चम्मच सेवन रोज गुनगुने दूध के साथ करे तो शरीर में बीमारियों से लड़ने की शक्ति मिलती है।

शीरीन कादिर
शाहजहांपुर

विधि

सबसे पहले मखानों को धीमी आंच में भुने जब वो क्रिस्पी हो जाए तो एक बर्तन में निकाल ले। अब खरबूजे, तरबूज, कद्दू और अलसी के बीजों को चटकने तथा क्रिस्पी होने तक रोस्ट करे धीमी आंच पर। अब काजू और बादाम को तीसरे राउंड में धीमी आंच पर भुने। अब भुने चने और छोटे टुकड़ों में किए गए छुआरे भी भून ले। सारी सामग्रियां ठंडी होने दे फिर इस में हरी इलायची डाल कर सभी चीजों को मिक्सी जार में डाल कर पाउडर बना ले। मिक्सी को लगातार नही चलाना है। पल्स मोड पर अर्थात स्विच ऑन, ऑफकर के पाउडर बनाए। इस पाउडर को एक थाली में निकाल ले ठंडा होने के बाद किसी एयर टाइट जार में रखे। रोज 1 चम्मच गुनगुने दूध के साथ ले। बदलते मौसम में बीमारियों से लड़ने की महिलाओ को शक्ति दे।

सामग्री.....

1.5 कप मखाने
1/4 कप कद्दू के बीज
1/4 कप खरबूजे के बीज
1/4 कप तरबूज के बीज
1/4 कप बादाम
1/4 कप काजू
1/4 कप भुना चना
1/4 कप अलसी
6 हरी इलायची
1०-12 कुटे हुए छुआरे
(छोटे टुकड़ों में)

नोट-

1. कोई भी सामग्री जलनी नहीं चाहिए
2. धीमी आंच का प्रयोग करे
3. मिश्रण ठंडा होने के बाद पीसे
4. पाउडर ठंडा हो जाए तो जार में भरे।

वर्तमान परिवेश में औषधि है रामचरितमानस

डा. श्रीकांत मिश्रा

साहित्य और मनुष्य का साहचर्य बहुत पुराना है, मानव जीवन का नयनोन्मीलन साहित्य के साथ ही हुआ होगा। जब नीले अंबर के नीचे अपने पुत्र को मां ने गले से लगाया होगा तो उसकी हृदय तंत्रियों से ममता का मधुर राग श्वास नलिका से प्रवाहित होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रभावित करने की शक्ति रखता है। यही संगीत आज लोरी के रूप में प्रसिद्ध है। लोरी–प्रभाती की यही परम्परा आज विकसित हो कर साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित है। यह साहित्य समाज को प्रभावित तो करता ही है साथ ही समाज को भी आत्मसात करता है, इस का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण रामचरितमानस है। यह रामकथा परंपरा की अमूल्य निधि है। तुलसी कृत रामचरितमानस भारतीय साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों में से एक है। यह महाकाव्य हिन्दू धर्म के महानायक भगवान राम के जीवन को प्रस्तुत करता है।रामचरितमानस के रचनाकाल को इंगित कर ते हुए लखते हैं– **संवत् सोलह सौ इकतीसा। करौं कथा हरिपद धरि सीसा।। नौमी भौम वार मधुमासा। अवधपुरी यह चरित प्रकासा।।**

रामचरितमानस की रचना का आरम्भ गोस्वामी तुलसीदास जी ने अयोध्या में विक्रम संवत 1631 (1574 ई.) को रामनवमी के दिन (मंगलवार) किया था। श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के अनुसार रामचरितमानस को लिखने में 2 वर्ष 7 माह 26 दिन का समय लगा था और उन्होंने इसे संवत् 1633 (1576 ईस्वी) के मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में राम विवाह के दिन पूर्णत: प्रदान की। यह महाकाव्य आध्यात्मिक तथा धार्मिक महत्व के साथ ही भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। यह श्रीराम के चरित्र गुणों, जीवन वृत्तांत और उनकी दिव्यता को प्रस्तुत करता है, जिससे पाठकों को धार्मिक और नैतिक संदेशों को सीखने का अवसर मिलता है। इस महाकाव्य का विभाजन सात कांडों में किया है, जो बालकाण्ड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड हैं।

प्रामचरितमानस में तुलसीदास ने श्रीराम, सीता, हनुमान, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, रावण, सुग्रीव, विभीषण, जटायु कबंध, शबरी आदि प्रमुख चरित्रों का के वर्णन किया है। यह सभी चरित्र कालजयी है,इन चरित्रों की वर्तमान परिवेश में उपादेयता किसी से छुपी नहीं है।

इस महाकाव्य में मनोहारी कथाएं, आदर्शवाद, श्रेष्ठ

जीवन दर्शन, मानवता और भक्ति को संप्रेषित करने समर्थ है। इसकी शैली सरल, सुंदर और सहज है,। रामचरितमानस के माध्यम से तुलसीदास ने धर्म, नैतिकता, प्रेम, समर्पण और श्रद्धा के महत्वपूर्ण संदेश दिए हैं। इसका अध्ययन,मनन एवं अनुसरण भव रोग निवारण की रामवाण औषधि है। रामचरितमानस के अंतिम सोपान उत्तरकांड में इन भवरोगों का बड़ा सार्थक वर्णन है।

सुनहु तात अब मानस रोगा। जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा।। मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।। काम बात कफलोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा।। प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्यपात दुखदाई।। बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना।। ममता दादु कंडु इरषाई। हरष बिषाद गरह बहुताई।। पर सुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई।।17।। अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ।। तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी। त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी।। जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका। कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका।। एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि। पीड़हिं संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि।। नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान। भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान।। एहि बिधि सकल जीव जग रोगी। सोक हरष भय प्रीति बियोगी।। मानस रोग कछुक मैं गाए। हहिं सब कें लखि बिरलेन्ह पाए।। जाने ते छीजहिं कछु पापी। नास न पावहिं जन परितापी।। बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे। मुनिहु हृदयँ का नर बापुरे।। राम कृपाँ नासहिं सब रोगा। जौं एहि भाँति बनै संजोगा।। सदगुर बैद बचन बिस्वासा। संजम यह न बिषय कै आसा।। रघुपति भगति सजीवन मूरी। अनूपान श्रद्धा मति पूरी।। एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाहीं। नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं।। जानिअ तब मन बिरुज गोसाँई। जब उर बल बिराग अधिकाई।। सुमति छुधा बाढ़इ नित नई। बिषय आस दुर्बलता गई।। बिमल ग्यान जल जब सो नहाई। तब रह राम भगति उर छाई।। सिव अज सुक सनकादिक नारद। जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद।। सब कर मत खगनायक एहा। करिअ राम पद पंकज नेहा।। श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं। रघुपति भगति बिना सुख नाहीं।। उत्तरकांड में भवरोगों के निवारण और सुख की प्राप्ति का एक मात्र उपाय बताते हुए कागभुशुण्डि कहते है– कि श्री रामजी के चरणकमलों में प्रेम करना चाहिए। श्रुति, पुराण और सभी ग्रंथ कहते हैं कि श्री रघुनाथजी की भक्ति के बिना सुख नहीं है।। निश्चय ही भगवान राम के चरित्र का अनुकरण लोगों में श्रद्धा, भक्ति और आदर्श जीवन शैली को प्रबल करता है। इसका प्रभाव हिंदी साहित्य, धर्म, संस्कृति और आदर्शवाद पर वर्तमान में भी परिलक्षित होता है।

इज्जत!

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

सुधा हॉस्टल से लौटी तो घर की चहल–पहल देख दंग रह गई। बहुत धूम धाम मची हैं। चारो तरफसे हंसने और खिलखिलाने की आवाज आ रही है। सुधा मन ही मन सोच रही है ऐसा क्या हो गया जो मुझे पता भी नहीं। सुधा समझने की कोशिश कर रही थी तभी मम्मी ने आकर उसके कान में कहा, 'देख क्या रही है बेटा। चल तैयारी कर। आज तुम्हारी हाथों में 'मेंहदी रचने वाली है।' सुधा को तो मानो सांप सूंघ लिया। वो स्तब्ध और नि:शब्दहो गई। आंसू टपकने लगे। फिर खुद को संभालती हुई बोली, 'मैंने तुमलोगों से कहा था न कई बार। फिर ये सब।' वह वाक्य पूरा कर

पाती उसके पहले ही मम्मी ने उसे रोका, 'तू समझती नहीं पगली। तेरी उमर हो गई।' 'लेकिन मुझे नहीं करनी शादी। पहले पढ़ाई पूरी कर अपने पैरों पर खड़ा होना है। तुम सब मेरी पढ़ाई छुड़ाई तो मै जीते जी मर जाऊंगी।' 'बेटा बात तो समझ। तुम्हारे पिता छोटे से किसान है। तू ही बता क्या हमारी इतनी औकाद है कि मै इससे ज्यादा पढ़ा लिखा लड़का ढूंढ पाऊंगी ? फिर जितनी देर होगी जगहंसाई होगी। मां बाप की इज्जत का खयाल कर बेटी। सुधा ने अपने आप को संभाला, 'तो इज्जत बचाने फिर देर क्यों कर रही। ले मेरा हाथ। जल्दी से रचा दे मेहंदी।

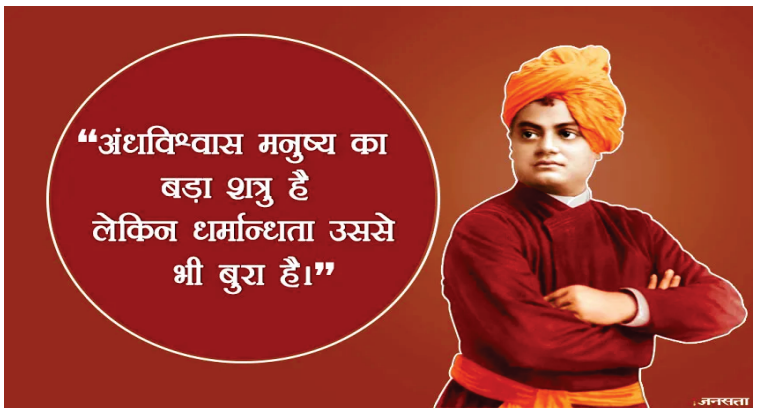

वेदों में संगीत की परम्परा

डा. कविता भटनागर

ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय संगीत का उद्गम वेदों में परिलक्षित होता है। वेद आर्य जाति के मूल ग्रंथ थे,जिसमे विश्व का समस्त ज्ञान भंडार भरा है। वेदों की उत्पत्ति के संबंध में यद्यपि भारी मतभेद है, परंतु सभी विद्वान वेद को विश्व का आदि साहित्य मानते है ,जिसकी रक्षा लेखन सामग्री के अभाव में मौखिक रूप से गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत हुई। वैदिक युग भारत के सांस्कृतिक इतिहास में प्राचीनतम युग माना जाता है। प्राचीन आचार्यों के अनुसार वेद, साहित्य की इकाई है। जिसके अंतर्गत मंत्र भेद के कारण ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद का प्रथक संहिता के रूप में निर्माण हुआ है और सामवेद को संगीत का वेद कहा गया है। अत: वैदिक काल में सामाजिक दृष्टि से संगीत को उच्च मान्यता प्राप्त थी। इस युग में चार वेदों तथा उनके विविध अंगों का विस्तार हुआ, सर्वप्रथम ग्रंथ ऋग्वेद ही प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है और इस ग्रंथ में संगीत की प्रचुर सामग्री मिलती है। ऋग्वेद काल में गीत, वाद्य, तथा नृत्य इन तीनों दृष्टियों का पर्याप्त प्रचलन दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक परिवार में संगीत का उच्च स्थान था तथा इसका आयोजन गृहलक्ष्मी करती थी। गीत के लिए गीर, गातु, गाथा, गायत्र, गीति व साम शब्दों का प्रयोग किया जाता था। ऋग्वेद की रचनाएं स्वरावलियों में गुथी हुई होने के कारण 'स्रोत' कहलाती थी। गीत प्रबंधो को गाथा कहा जाता था। जो एक विशिष्ट तथा परंपरागत गीत का प्रकार है और इन गाथाओं का गायन धार्मिक तथा लौकिक समारोह पर किया जाता था, इनको गायत्रिन कहा जाता था । गाथा के लिए साम नाम भी आता है, इन सामों का गायन कुछ विशिष्ट छंदों के साथ किया जाता था। अंतेष्टि के समय भी साम का गायन किया जाता था, वैदिक आर्यों की यह मान्यता थी कि यह गान मृत व्यक्ति को यम धाम तक सुलभता से पहुंचा सकते हैं। इस वेद की ऋचाएं स्वरलिपि में निबद्ध होने के कारण स्तोम गुणगान कही जाती थीं, जो तीन ऋचाओ के समूह पर आधारित होती हैं। आधुनिक संगीत में जिस प्रकार विविधता के लिए गीत की पंक्ति व दोहों का ज्ञान अनेक बार विविध स्वरों के स्थान पर किया जाता है, उसी प्रकार वैदिक संगीत में स्तोम नाम से प्रसिद्ध था।

ऋग्वेद काल में गायन के साथ वाद्य का हुई पूर्ण विकास मिलता है। तीनों ही प्रकार के वाद्य अवनद्ध,तंतु, व सुषिर वाद्य जिन्हें नांठी कहा जाता था, उनका अविष्कार हो चुका था। इस काल में गायन के साथ वादन का भी साहाचार्य रहा, दुंदुभी, आदम्बर, भूमिदुंधभी, वनस्पति वाद्यों में वीणा, कांड वीणा, कर्करी वीणा, वरणय वीणा और सुषिर वाद्यों में तुनव, आदि का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद काल में यज्ञादि के समय साम गायन का विशिष्ट स्थान है। रैवत, अर्क, भद्र, वेरूप इत्यादि सामो का गायन यज्ञादि धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त लौकिक प्रसंगों पर भी होता था। ऋग्वेद में तीन स्वरों के भेद पाए जाते हैं ऋद्दात, अनुदात और स्वरित। उद्दात स्वर अपने समान्य स्थान से ऊंचे उच्चारण पर होता है। अनुदात स्वर का उच्चारण नीचे स्थान पर और जिस स्वर पर उदात्त और अनुदात का समाहार होता है। वह स्वरित् होता है, ऋग्वेद के 1० वे मंडल में, उस समय में सात स्वरों के होने का संकेत मिलता है।

इस काल में गायन वादन के साथ नृत्य का भी पूर्ण अस्तित्व विद्यमान था। स्त्री और पुरुष दोनों ही नृत्य के आयोजन में भाग लेते थे। ऋग्वेद में उत्सवों और त्योहारों से मिलते जुलते एक मेले का भी उल्लेख मिलता है। जिसे 'समन' कहते हैं। जिसमें स्त्रियां विशेषकर कुवारिया वर की खोज में वहां जाती थी। समन के द्वारा ही समाज में संगीतमय वातावरण बना । इसमें स्त्रियां कई प्रकार के नृत्य प्रस्तुत करती थीं और पुरुष कंठ संगीत का सुंदर ढंग से प्रदर्शन करते थे और समन आगे चलकर 'समज्जा' के नाम से जाना गया ऋक्क गान स्वर और शब्द के संयोग का प्राचीनतम उदाहरण है, ऋग्वेद की गानोपयोगी ऋचायों को संकलित करके ही सामवेद की रचना हुई। इसके दस मंडल और 1०28 सूक्त हैं। ऋग्वेद काल में संगीत का जन जीवन में प्रचार था, धार्मिक अनुष्ठानों के अतिरिक्त सामाजिक समारोह में भी सांगीतिक आयोजन होते थे ।

यजुर्वेद में उन मंत्रों का संकलन है , जिनका गायन यज्ञ के अवसर पर कर्मकांड के लिए होता था। यद्धपि संगीत के विकास की दृष्टि से यजुर्वेद का अधिक महत्व परिलक्षित नही होता है तथापि प्राचीन संगीत से सम्बन्धित परिस्थिति जानने में यजुर्वेद कम सहायक भी नही है। यजुर्वेद के ब्राह्मण तथा आरण्यक संहिता से स्पष्ट है कि साम का गायन साम गायकों के द्वारा ही होता था। यजुर्वेद में वर्णित सोम यज्ञ में साम गायक का सर्वप्रथम स्थान है, इसमें चार गायक होते है, जिनको क्रमश: होता, अधर्व्य, उदगाता तथा ब्रह्मा कहते है। यज्ञ कार्यों का संचालन

अधर्व्यु नामक ऋतिवज्ञ के द्वारा किया जाता है। यज्ञो में उदगाता प्रमुख गायक होता था तथा अन्य गौड़ प्रसंगों पर होते थे, गायन का दायित्व प्रस्तुता, प्रतिहर्ता, उपगाता नामक सहयोगियों द्वारा किया जाता था। यजुर्वेद में मंत्रों के अक्षरों की संख्या निश्चित होती थी। यह मंत्र गद्यात्मक होते थे। साम गायक का सर्वप्रधान स्थान होता था। गायन के साथ वाद्यों का भी प्रयोग किया जाता था। जिसमें वीणा, दुंदुभी, भूमि दुंदुभी, शंख आदि का प्रयोग किया जाता था। अश्वमेघ आदि यज्ञों में मनोरंजन के लिए गाथा गान के साथ वीणादि वाद्यों का प्रयोग किया जाता था। अत: यजुर्वेद काल विशेष रूप से यज्ञादि का उत्कर्ष काल है। जिसमें आर्यो ने यज्ञ संबंधी क्रियाकलापों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इन यज्ञों में साम गायन का गायन अनिवार्य रहा है, साम उस समय का वैदिक संगीत था और गाथा नाराशंसी आदि लौकिक संगीत था। उस समय की महिलाओं में संगीत का कौशल खूब पाया जाता था ।

अथर्ववेद का संगीत में एक विशिष्ट स्थान है, अथर्व संज्ञा उन मंत्रों के लिए है जो सुखमूलक और मंगलकारी है। इन मंत्रों का संबंध उन अभिचार मंत्रों से है जिनका प्रयोग जारण मारण आदि कार्यों के काम में किया जाता है। अथर्ववेद में सामवेद का पूर्ण गौरव गान है। अथर्ववेद के अनुसार ऋकसाम दोनो यज्ञ, कर्म के लिए ओज, बल, मांगलय का संपादन करने वाले हैं। इनके द्वारा ही क्रियाकर्म का विधान संपन्न होता है। सामगायन की समृद्धि अथर्वकाल में हो चुकी थी एवम नानविधि क्रिया कर्मो में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। वाद्यों के अंतर्गत आघाट, कर्करी तथा दुंदुभी का उल्लेख स्थान स्थान पर उपलब्ध है। गंधर्वलोक इन वाद्यों के नाद से सदा अनुनादित होता रहता था, अथर्व में वर्णन है कि दुंदुभी द्वारा शत्रुओं को परास्त किया जाता था, दुंदुभी की गर्जना वीरों के हृदय में पौरुष तथा शत्रुओ के हृदय में आतंक का संचार करती थी। अथर्व में वैवाहिक जीवन को सुखी बनाने के लिए गंधर्वों से प्रार्थना की जाती थी।

वेदों में सामवेद को संगीत का वेद माना गया है तथा संगीत कला के विकास की दृष्टि से सामवेद का एक विशिष्ट स्थान है। केवल यही एक ऐसा ग्रंथ है। जिसमें भारतीय संगीत के अनादि स्रोत का हृदयस्वरूप हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। गांधर्ववेद को संगीत का ही उपवेद माना गया है। यह एक ऐसा वेद है जिसके मंत्र यज्ञों में देवताओं की स्तुति करते पाए जाते है। ऋचाओ के ही संगीतमय परायण से साम गायन का प्रथम विकास ऋषि ओ द्वारा किया गया। सामवेद ऋग्वेद की ऋचाओ का गेय रूप में परिवर्तित संग्रह है। ऋग्वेद की ऋचाओं का शास्त्रीय एवम परंपरागत तरीके से गायन हेतु उनको सामवेद नामक ग्रंथ में एक स्थान पर संकलित किया गया। सामवेद के मुख्य रूप से दो भाग है ऋचार्चिक और गान। आर्चिक में केवल ऋग्वेद की ऋचाओं का संग्रह है, आर्चिक के दो भाग है ऋग्वार्चिक और उत्तरार्चिक। सामवेद का दूसरा भाग गान ग्रंथ है। ऋषियों ने ऋग्वेद के आधार पर पहले गान बनाए और फिर उन गानों को संग्रह करके अनेक ग्रंथ बनाए। इन ग्रंथों में साम का स्वरमय रूप विद्यमान है । यह चार गान प्रसिद्ध है ऋग्रामगेयगान, आरण्यक गान, ऊह गान, उह्म गान, सामवेद की 13 शाखाएं मानी जाती है, कालक्रम में विलीन हुई इन शाखाओं में से आज तीन ही शाखाएं उपलब्ध है ऋामायणी, कौथूमी, जैमिनीय, इन तीन शाखाओं के गान अलग अलग है। सामवेद की आर्चिक संहिता में आठ हजार मंत्र थे, सामवेद के द्वारा ही संगीत को नियम और विधान से जोड़ दिया गया, पहले साम गान में तीन स्वर –उद्दात, अनुदात, और स्वरित प्रयोग होते थे, आगे चलकर एक एक करके अन्य स्वरों की स्थापना होती गई और वैदिक काल में साम गायन सात स्वरों का होने लगा। उद्दात– गंधार निषाद , अनुदात – ऋषभ धैवत और स्वरित ऋषड्ज मध्यम। आज भी संस्कृत विद्यालयों में वेदों की ऋचाओ और श्लोकों का पाठ और सामवेत गान उपरोक्त स्वर क्रम में ही देखा जा सकता है। साम गान में गेयात्मक छंद होते है, उस समय इन छंदों एक विचित्र स्वर विन्यास के साथ गाने की रीति थी। साम गान के मुख्य तीन भाग होते थे – प्रस्ताव , प्रतिहार ,और उदगीत। इनके तीन उपांग –हिंकार, उपद्रव , और निधान थे। समय परिवर्तनअनुसार इन्ही में से ध्रुपद के चार पद बने। साम गान के तीन गायक होते थे– प्रस्तोता, उदगाता और प्रतिहर्ता। मुख्य गायक उदगाता तथा शेष दो उसके सहयोगी होते थे। सहयोगी गायक हो आदि मंद ध्वनि तंबूरे के रूप में ध्वनित करते रहते थे । जिसको आधार मानकर मुख्य गायक साम गान करता था। सामगान के मुख्य पांच भेद– हिंकार या हुंकार जिस तरह वर्तमान समय गायक गाने के आरंभ में ओ करते हुए स्वर भरता है उसी तरह साम गायक हूं आदि मंद ध्वनि में उच्चारण करते थे।

प्रस्ताव – गीत अथवा मंत्र के आरंभिक भाग को कहते है। उदगीत –प्रस्ताव के बाद उदगीत गीत का मुख्य भाग होता है।

प्रतिहार –उदगीत के अंतिम पद से प्रतिहर्ता गान को आरंभ करता है और प्रतिहार भाग में आता है।

निधान – यह गीत का अंतिम भाग होता है। जिसको प्रस्तोता उदगाता और प्रतिहर्ता तीनों एक साथ गाते है, साम गान में स्वर का विशेष महत्व था, साम के आरंभ में ओम् स्वर से करने की परंपरा थी । शेष गायक इसी स्वर की संगति करते थे ।।

ज्ञान विज्ञान की भाषा है हिन्दी : डा. शैलेन्द्र कबीर

स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में व्याख्यान का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से 'हिंदी साहित्य पर बाजार का प्रभाव' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ शैलेंद्र 'कबीर' ने कहा कि आज पूरी दुनिया एक बाजार है। बाजार में वही बिकता है जो दिखता है। आज देश और दुनिया में हिंदी और हिंदुस्तानियों का परचम लहरा रहा है। दुनिया भारतीय ज्ञान-विज्ञान की मुरीद है। हमारे ज्ञान-विज्ञान और प्रबंधन से आकर्षित होकर तमाम देशों के विश्वविद्यालय में हिंदी पर

अनेकानेक शोध हो चुके हैं, हो रहे हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि हिंदुस्तान के ज्ञान विज्ञान को जानने के लिए उसकी भाषा हिंदी को जानना आवश्यक है। कार्यक्रम अध्यक्ष स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि आज बाजारवादी दौर में हम सब प्रभावित है। आज भारत के युवा देश दुनिया में अपना परचम लहरा रहे हैं। उसके पीछे हमारी अपनी भाषा है। हिंदी साहित्य, संस्कृति और संवेदना की भाषा है। उन्होंने कबीर की कुछ पंक्तियों का उल्लेख करते हुए कहा कि-पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ -पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय। बाजारवादी दौर में यदि कोई प्रेम का पाठ पढ़ा रहा है तो वह है हिंदी और हिन्दी का सच्चा सपूत कबीर है।

विशिष्ट वक्ता डॉ नागेश पांडे 'संजय' ने कहा कि हिंदी को आत्मसात करते हुए कबीर, तुलसी, सूर, निराला ने हिंदी से बहुत कुछ लिया और हिंदी को बहुत कुछ दिया, उन्होंने कहा कि बाजार पर हिंदी का प्रभाव जो पड़ना चाहिए वह ना के बराबर है। विशिष्ट वक्ता डॉ प्रशांत अग्निहोत्री ने कहा कि हिंदी हमारे हृदय की भाषा है और हृदय की भाषा कभी किसी का अहित नहीं करती। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य प्रो आरके आजाद ने किया तथा आभार प्रो. आलोक मिश्रा ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ श्रीकांत मिश्र ने किया। इस मौके पर प्रो. आदित्य कुमार सिंह प्रो शालीन कुमार सिंह , डॉक्टर विकास खुराना, डॉक्टर शिशिर शुक्ला, प्रो मधुकर श्याम शुक्ला डॉ आदर्श पांडे, डॉ कविता भटनागर, डॉ प्रतिभा सक्सेना, डॉ अर्चना गर्ग, डॉ मनोज मिश्रा, डॉ अंजूलता अग्निहोत्री, डॉ सुजीत वर्मा, डॉ मृदुल पटेल, डा. दुर्ग विजय, डॉ राजीव कुमार, डॉ संदीप वर्मा, रश्मि राठौर, डॉ बलवीर, बागीश, रवि, शोभित, संजय कुमार, आदर्श शुक्ला आदि मौजूद रहे।

कस्तूरबा आवासीय विद्यालय की बालिकाओं को किया जागरूक

लोक पहल

शाहजहांपुर। बेटी बचाओ बेटी पढाओ के तहत छात्राओ के सशक्तिकरण स्वावलंबन, सुरक्षा स्वास्थ्य, शिक्षा आदि पर जागरूक करने के उद्देष्य से कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय शहबाजनगर, ददरौल मे जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अमृता दीक्षित ने छात्राओं को बाल विवाह, बाल श्रम जैसी कुरीतिओं को खत्म करने के लिए जागरूक किया। उन्होंने समस्त विभागीय योजनाओं की जानकारी दी। स्वास्थ्य सोशल वर्कर सुप्रिया ने बालिका सुरक्षा, महिला सुरक्षा एवं शिक्षा से सम्बन्धित जानकारियां दी। कार्यक्रम में सोशल वर्कर सुप्रिया अवस्थी, शशि शर्मा, आराध्या दीक्षित, फरजाना, सुष्मिता, मंजू, पूनम, महिमा,

अमृता, अंजलि, राखी, नीतू, रोली, मोहिनी, दामिनी, आरुषि आराध्या सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

गणेश महोत्सव में सुन्दरकांड का पाठ

लोक पहल

शाहजहांपुर। मठिया के महाराज की स्थापना के अवसर पर पंडित राजीव मिश्रा सरस ने सामूहिक सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया। पं. राजीव मिश्रा सरस ने बताया कि सुंदरकांड का पाठ विशेष रूप से क्यों किया जाता है उन्होंने कहा कि माना यह जाता है कि सुंदरकांड के पाठ से हनुमान जी महाराज प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा बहुत जल्द प्राप्त हो जाती है जो लोग नियमित रूप से सुंदरकांड का पाठ करते हैं उनके जीवन के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। इस दौरान आयोजन समिति के प्रवक्ता सुचित सेठ, मनोज शर्मा, अरुण रस्तोगी, शानू शर्मा, रानू शर्मा, अर्पित कपूर, निश्चित मिश्रा, शिवांशु शुक्ला, सुधीर गुप्ता पार्षद, कपिल सिंह वर्मा, चिराग गुप्ता, विमल कपूर, महेंद्र कपूर, अंकुर कटियार, रितेश शर्मा, अरुण शर्मा, सोनी मल्होत्रा, प्रदीप मल्होत्रा, नितिन रघुवंशी, सचिन शर्मा, हंसराज सिंह कुशवाहा, रोशन कनौजिया व आशीष त्रिपाठी एडवोकेट आदि का सहयोग रहा।

नेहरू युवा केन्द्र व गंगा समिति ने चलाया स्वच्छता सेवा अभियान

शाहजहांपुर (लोक पहल)। नेहरू युवा केन्द्र एवं जिला गंगा समिति के संयुक्त तत्वावधान में विकासखंड ददरौल में स्थित देवस्थान के परिसर में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत वृहद स्वच्छता श्रमदान कार्यक्रम चलाया गया। जिसमें सिानीय लोगों के सहयोग से पूरे परिसर को साफकिया गया। तथा सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। इस मौके पर जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया ने सभी से इस विशेष अभियान में अधिकतम जनसहभागिता करने का अनुरोध करते हुए अपने आसपास सफाई रखने का आव्हान किया और सभी से स्वच्छता श्रमदान को अपनी दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग बनाने के लिए अनुरोध भी किया। जिला परियोजना अधिकारी नमामि गंगे विनय कुमार सक्सेना ने सभी को स्वच्छता शपथ दिलाकर इस अभियान के प्रति कृतसंकल्पित होकर निष्ठापूर्वक तरीके से कार्य करने को कहा। कार्यक्रम में क्षेत्र पंचायत सदस्य रामू शर्मा, ददरौल ग्राम प्रधान, राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक निर्दोष शर्मा, रवि सक्सेना, हिमांशु सक्सेना, करन शर्मा सहित विभिन्न युवा मंडल सदस्यों एवं स्थानीयजनो की सहभागिता रही।

नैतिकता एवं कानून में घनिष्ठ संबंध

एसएस लॉ कालेज में "सार्वजनिक जीवन में विधि एवं नैतिकता की भूमिका" विषय पर व्याख्यान का आयोजन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। एसएस लॉ कालेज में 'सार्वजनिक जीवन में विधि एवं नैतिकता की भूमिका' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बलराज चौहान ने कहा कि आध्यात्मिकता से हम अपनी सोच बदल सकते हैं, क्योंकि आध्यात्मिकता से हमें सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। विधि का नैतिक होना जरूरी नही है, परंतु यदि कोई विधि नैतिकता पर आधारित नहीं होती है तो समाज उसे अस्वीकार कर देता है।

मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि धर्म, पाप पर नियंत्रण पाने का रास्ता है, यहां तक की अपराधी भी पाप से बचने की कोशिश करते हैं, इस तरह जो भी व्यक्ति पाप से डरता है, वह नैतिक है। कार्यक्रम अध्यक्ष विधान परिषद सदस्य विद्यासागर सोनकर ने कहा कि समाज में नैतिकता और विधि साथ-साथ चलते हैं। नैतिकता से ही समाज और राष्ट्र की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। विशिष्ट वक्ता हाशमी लॉ कॉलेज, अमरोहा की प्राचार्या डॉ. राना परवीन ने कहा कि विधि और नैतिकता के बीच घनिष्ठ संबंध है। एक बेहतर शिक्षा नैतिकता के गुणों का विकास करती है। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। एसएसपीजी के प्राचार्य डॉ राकेश कुमार आजाद ने अतिथियों का स्वागत किया, संचालन डॉ. अनुराग अग्रवाल ने किया तथा महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ. जयशंकर ओझा ने सभी आभार व्यक्त किया। डॉ. प्रतिभा सक्सेना एवं छात्राओं ने स्वागत गीत एवं वंदे मातरम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. अनिल कुमार शाह, डॉ.अमित कुमार यादव, डॉ. पवन कुमार गुप्ता, डॉ. दीप्ति गंगवार, विजय सिंह, डॉ प्रेमसागर, डॉ. अमरेंद्र सिंह, प्रियंक वर्मा साथ ही महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

बीसीए में गुनगुन एवं पीजीडीसीए में सोनाली रहीं अव्वल

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के कम्प्यूटर साइंस विभाग में बीसीए तृतीय वर्ष का परिणाम शत प्रतिशत रहा। एस. एस. कालेज के कम्प्यूटर साइंस विभाग में बीसीए तृतीय वर्ष के 54 परीक्षार्थी एवं पीजीडीसीए के 17 परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए, जिसमें से बीसीए तृतीय वर्ष के 46 परीक्षार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 8 परीक्षार्थी द्वितीय श्रेणी से एवं पीजीडीसीए के 17 परीक्षार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए । कम्प्यूटर साइंस विभाग के विभागाध्यक्ष डा.संदीप कुमार अवस्थी ने बताया कि बीसीए की छात्रा गुनगुन

पासवान ने 75.56 प्रतिशत अंको के साथ प्रथम, सेजल वर्मा ने 74.57 प्रतिशत अंको के साथ द्वितीय एवं कोमल गुप्ता ने 74 प्रतिशत के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। पीजीडीसीए की छात्रा सोनाली श्रीवास्तव ने 75 प्रतिशत अंको के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिक्षार्थियों की सफलता पर मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती, प्रबन्ध समिति के सचिव डा.अवनीश कुमार मिश्रा, प्राचार्य प्रो.आरके आजाद, प्रोफेसर डा.रजत कुमार सिंह, डा.उमेश सिंह विसेन, सुमित कुमार त्रिवेदी, राजेश कुमार सक्सेना, अनामिका शुक्ला आदि ने हर्ष व्यक्त किया है।

वर्क फ्रॉम होम और आनलाईन कार्य को बढ़ावा देगा 5 जी नेटवर्क

एसएस कालेज में 5 जी नेटवर्क पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज के वाणिज्य विभाग में 'भावी विकास में 5 जी नेटवर्क की भूमिका' विषय पर अतिथि व्यख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो. अनुराग अग्रवाल ने स्वामी शुकदेवानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य वक्ता पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिओ हेड राजेश शर्मा में कहा कि 5जी नेटवर्क ने स्पीड की बाधा को कम किया है जिस कारण वर्क फ्रॉम होम और ऑनलाइन कार्य को बढ़ावा मिला है। 5जी नेटवर्क में कंपनी डेटा और जेनरेशन के कुशलतापूर्वक उपयोग करने की पूरी क्षमता है।

5 जी केएंटरप्राइज और टु-एंड प्लास्टिक और सुपरमार्केट के विपणन के लिए का उपयोग किया जा सकता है। अतिथि वक्ता डा. यशवर्धन तोमर, सुनील दीक्षित व हरिओम तिवारी ने 5 जी नेटवर्क के लाभ पर प्रकाश डाला। बी. कॉम की छात्रा कशिश, और रिचा ने सभी अतिथियों व शिक्षक का चंदन तिलक कर स्वागत किया। डा. रूपक श्रीवास्तव के संचालन में हुए व्यख्यान में स्वागत डा. देवेंद्र सिंह ने किया। डा. गौरव सक्सेना और डा. अजय कुमार वर्मा के संयुक्त संयोजन में हुए कार्यक्रम में सभी के प्रति आभार डा. कमलेश गौतम ने व्यक्त किया।

इस अवसर पर डा. संतोष प्रताप सिंह, डा. सचिन खन्ना, बृज लाली, अपर्णा त्रिपाठी, अखण्ड प्रताप सिंह, यशपाल कश्यप, देव सिंह कुशवाहा, हरिओम तिवारी, राहुल शुक्ला, अम्बुज वाजपेयी, शैलेन्द्र तिवारी, निशांत मिश्रा, अश्वनी कुमार, अनूप श्रीवास्तव, मोहम्मद चाँद , श्रवण कुमार, प्रेम पाल, आकाश गुप्ता, कादिर रजा, बुशरा खान, बागीश मिश्रा, अंशु राठौर, अंकुर व मुकेश शर्मा आदि के साथ बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।